शारदा ग्रंथमाला-12

# शहीद पण्डित प्रेमनाथ भट्ट

(1932 ई॰ - 1989 ई॰)
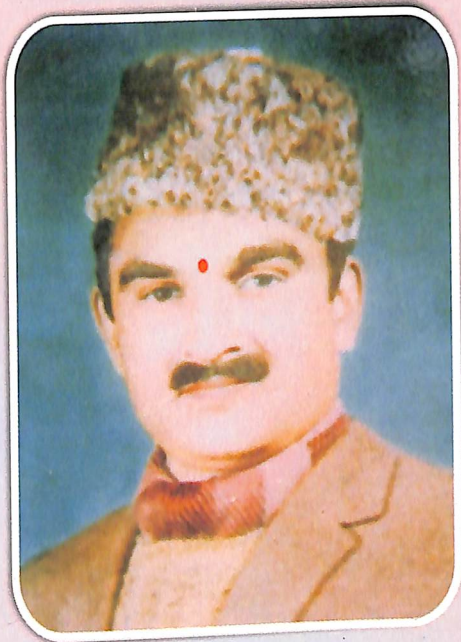
प्रोफ़ेसर (डा॰) भूषण लाल कौल
डी॰ लिट

प्रकाशन प्रभाग :-
संजीवनी शारदा केन्द्र
आनन्द नगर बोड़ी, जम्मू - 180 002

**प्रकाशक**
प्रकाशन प्रभाग
संजीवनी शारदा केन्द्र
आनन्दनगर, बोडी, जम्मू – 180 002
दूरभाष :– 0191-2501480

संस्करण प्रथम (2009 ई॰)
संख्या : 500
मूल्य : 20/-

# शहीद पण्डित प्रेमनाथ भट्ट

(1932 ई० – 1989 ई०)



प्रोफेसर (डा.) भूषण लाल कौल

**प्रकाशन प्रभाग :-**

संजीवनी शारदा केन्द्र

**आनन्द नगर, बोडी, जम्मू - 180002**

# फूल की अभिलाषा

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों मे गूँथा जाऊँ।

चाह नहीं प्रेमी–माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ।

चाह नहीं, सम्राटों के शव पर हे हरि! डाला जाऊँ।

चाह नहीं, देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ।

मुझे तोड़ लेना माली उस पथ में तुम देना फेंक।

मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक।।

.....स्वर्गीय माखन लाल चतुर्वेदी –'एक भारतीय आत्मा'

**भट्ट साहब के व्यक्तित्व निर्माण में जिस महिला का योगदान सर्वोपरि है वह है उन की माता श्रीमती जानकी माला (जानकी माल)**

**तथा**

**जीवन संघर्ष में जिस महिला ने भट्ट साहब के साथ विकट स्थितियों का सामना साहस के साथ किया, वह है उनकी जीवन संगिनी**

**– कान्ता जी (श्रीमती प्रेम रानी)**

**मेरी यह रचना सादर समर्पित है इन दो महिलाओं के प्रति**

**– भूषणलाल कौल**

# अनुक्रमणिका

पृष्ठ
संख्या

# सात पीढियों का विकास

हिन्दुत्व की मानमर्यादा का सम्मान करने वाले कर्मवीर आस्थावान राष्ट्र ध्वज वाहक निर्दिष्ट लक्ष्य विचार और नैतिक मान्यताओं के प्रति समर्पित समाज सेवी चुनौतियों को स्वीकार करने वाले दृढ संकल्पी नीतिज्ञ (strategist) कश्मीरियत के पक्षधर जुझारू कश्मीरी पण्डित घाटी के नामवर अधिवक्ता (advocate) विधि विशेषज्ञ (Jurist) व्यवहार कुशल मृदुभाषी शिष्ट गामवासी पण्डित अनन्तनाग वासियों के हृदय–हार न्याय के पथ पर कर्मरत देश भक्त अधर्मियों के छल कपटमय घातक कुकर्म के शिकार शहीदवतन पण्डित प्रेमनाथ भट्ट का जन्म अनन्तनाग कश्मीर निवासी एक मध्यवर्गीय कश्मीरी पण्डित परिवार में 5 दिसंबर सन् 1932 ई॰ के दिन हुआ। इन के पूज्य पिता श्री लक्ष्मण (कश्मीरी लछमन) भट्ट एवं माता श्रीमती जानकी माली के दाम्पत्य जीवन में पुत्र जन्म विधाता के अनुपम उपहार के रूप में हर्षोल्लास का कारण बना।

लक्ष्मण भट्ट के पूर्वज मूलतः बिजबिहाड़ा (विजयेश्वर कश्मीर) के निवासी थे। इन के पिता श्री व्यशन् (मूल–विष्णु) भट्ट ने बिजबिहाडा से अनन्तनाग प्रस्थान किया और स्थायी रूप से अनन्तनाग में रहने लगे। परिवार का वंशवृक्ष कई पीढ़ियों के इतिहास से जुड़ा है। कंठकश्यप गोत्रीय विजयेश्वर निवासी भट्ट परिवार की पिछली सात पीढ़ियों का विकास इस प्रकार हुआ है –

**गोत्र-कण्ठ कश्यप**

**कुलदेवी-शारिका भगवती**

**कुल भैरव-आनन्देश्वर भैरव**

पण्डित सतराम भट्ट

(निवासी – विजयेश्वर–कश्मीर)

हर भट्ट (पुत्र सतराम भट्ट)

व्यशन् भट्ट

बोनिमाल (दोगज द्यद)
सूरजराम भट्ट
(दत्तक पुत्र)
लछमण भट्ट
जानकी माली
कमलावती
प्रेमनाथ भट्ट
कान्ता जी
श्यामा
राजनाथ भट्ट
चूनी कुमारी
सीमा
शैली
वीणा जी
रूप कृष्ण शाह (पति)
(सुपुत्र पण्डित नन्द लाल शाह अनन्तनाग
शिखा शाह
कश्मीरी लाल भट्ट
रजनी भट्ट
रोहित भट्ट
कुमार जी भट्ट
सविता भट्ट
निखिल भट्ट, जया भट्ट

राजभट्ट (पुत्र सतराम भट्ट)
आनंद भट्ट
ईशर भट्ट, जिया लाल भट्ट
सोन् भट्ट, राधाद्यद, वन्माल
शम्भूनाथ भट्ट

सोमनाथ काशीनाथ
राधाकृष्ण भट्ट, रूप कृष्ण भट्ट, अशोक भट्ट
श्याम लाल भट्ट
श्याम रानी
जवाहर लाल भट्ट
रत्ना भट्ट
डॉ० दीपक भट्ट
इन्दुजा भट्ट
सुनील भट्ट (पुत्र)
भूषण लाल भट्ट (भूतपूर्व एम.एल.सी)
ललिता
शीतल भट्ट (पुत्री)

## बाल्यकाल एवं शिक्षा
## (स्कूल से विश्वविद्यालय तक)

एक धर्मनिष्ठ आस्थावान सम्पन्न परिवार में बच्चे के मानसिक और शारीरिक विकास की ओर विशेष ध्यान दिया जाने लगा फलतः शैशवावस्था में ही परोपकार, सदाचार, सत्यनिष्ठा संयमित एवं अनुशासित जीवन जीने का पाठ पढाया जाने लगा। उनके माता–पिता उन्हें संस्कारवान पुत्र के रूप में देखने के अभिलाषी थे। अतः तदनुकूल प्रयास होने लगे। आरम्भिक शिक्षा कसबें मे फिर इस्लामिया हाई स्कूल अनन्तनाग। सन् 1947 ई० मे मैट्रिक की परीक्षा पास की। घाटी के बहुचर्चित सम्माननीय अध्यापक पण्डित सतलाल राजदान लिखते हैं –

"श्री प्रेमनाथ भट्ट उस पहले ग्रुप के एक छात्र थे जिसे मैंने तब पढ़ाया जब मैं पहली बार अध्यापन के पेशे के साथ जुड गया। उस में दिव्य गुण थे और हर समय देश एवं देशवासियों की सेवा

करने में तत्पर रहते थे।''

'Pandit Prem Nath Bhat'- The man with Misson compiled by B.K Koul on behalf of Memorial Committe. Page- A.2

सन् 1947 ई० में उन्होंने एस.पी. कालेज श्रीनगर में इंटरमीडियेट कक्षा में प्रवेश लिया और सन् 1951 ई॰ में अमर सिंह कालेज श्रीनगर से बी.ए. की परीक्षा पास करते ही अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय में एम ए और एल.एल.बी की कक्षाओं मे एक साथ प्रवेश लिया। यह प्रावधान (provision) उस समय अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय में था।

श्रीनगर में पढाई के दिनों में उनके सहपाठियों में सर्वश्री जिया लाल कौल रज़गोरूँ जानकी नाथ धोबी, मक्खन लाल हरकार, सोमनाथ सूरी, हृदय नाथ तिक्कू आदि उन के निकट सम्पर्क मे रहें हैं। मित्र जनों में कश्मीर के अतीत एवं वर्तमान पर चर्चा चलती रहती थी और नये राजनीतिक परिदृश्य में अल्पसंख्यक की भूमिका पर विचार होता था। लगता है तब भी उपेक्षित युवाजन राजनीतिक दृष्टि से जागरूक थे।

**मुस्लिम विश्वविद्यालय एक प्रेरणा स्रोत**

स्वतंत्रता प्राप्त के तुरन्त बाद अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय एक विशिष्ट समुदाय में राजनीतिक चेतना को जाग्रत करने के हेतु नाना गतिविधियों का केन्द्र बन चुका था। कश्मीर से आए छात्र इन कार्यक्रमों में विशेष रूप से बढ–चढ कर भाग लेते थे। राजनीतिक चेतना को जाग्रत करना और युवा मानस को अपने अधिकारो के प्रति जाग्रत करते हुए संघर्ष के हेतु प्रेरित करना डिग्री प्राप्त करने से ज्यादा महत्वपूर्ण समझा जाता था। मेरा दृढ़ विश्वास है कि मुस्लिम विश्वविद्यालय के वातावरण में दो वर्ष रहकर शहीद प्रेमनाथ भट्ट और शहीद टीका लाल टपलू ने अपने अल्पसंख्यक वजूद को पहचाना। वे अपने कर्तव्य कर्म के प्रति

सचेत हो उठे क्योंकि दोनो कुशाग्र बुद्धि के मेधावी छात्र थे। अपने आस–पास क्या कुछ हो रहा है और राजनीति क्या खेल खेल रही है उस वातावरण से अप्रभावित रहना दोनो के लिए सम्भव नही था। जब दूसरे सम्प्रदाय के बुद्धिजीवी छात्र धर्म निरपेक्ष भारत में अस्तित्व की रक्षा के हेतु संगठित होकर प्रयास कर सकते हैं तो हम आलस्य की निद्रा में क्यों सोये और खोये जा रहे है। सिद्धान्त तो समझ में आगये केवल सिद्धान्तों को व्यवहारिक रूपदेना था और इसी राजनीति जागरूकता के साथ प्रेमनाथ भट्ट एम ए एल एल बी की परीक्षाएँ पास करके लौट आये और सन् 1953 में ही अनन्तनाग के बार (विधिज्ञवर्ग) में शामिल हुए।

डॉ अर्जुन नाथ (सागाम) ने मुझे बताया कि 5 दिसम्बर सन् 1955 ई० के दिन श्रीनगर के उच्च न्यायालय ने उन्हें हाईकोर्ट के लिए अधिवक्ता (advocate) नियुक्त किया। युवा प्रेमनाथ अलीगढ़ विश्वविद्यालय में भी पर्याप्त सक्रिय रहे थे यहाँ तक कि अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक मंच के सदस्य भी बने। यहाँ से उन्होंने एल एल.बी की पढ़ाई के साथ साथ एम.ए. राजनीतिशास्त्र की पढ़ाई भी पूरी कर ली तथा मुस्लिम युनिवर्सिटी के एक प्रावधान का लाभ उठाते हुए कुछ वर्षो के बाद एम. ए अर्थशास्त्र की डिग्री भी हासिल की।

**वरदान माँ सरस्वती का**

मैं आरम्भ में ही भट्ट साहब की एक अद्भुत विशेषता की ओर आप का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। भट्ट साहब माँ सरस्वती के वरदहस्त पुत्र थे। उन्हें माँ ने अद्भुत वाक्शक्ति प्रदान की थी। यही कारण है कि एक सफल एडवोकेट के रूप में उनकी चर्चा सर्वत्र होने लगी। तर्काश्रित, तथ्याधारित विवेक प्रधान वाक्शक्ति यह गुण बहुत कम लोगों के पास होता है। ज्ञान, विवेक और बोध (understanding) के साथ यदि व्यक्ति में विश्लेषण अथवा विवेचन करने की क्षमता हो तो सोने में सुहागा मिल जाता है।

बोलते सभी हैं, बोलने की शक्ति सब में है लेकिन स्वयं बोल कर दूसरे को चुप कराने की शक्ति सब में नहीं होती। मैंने अपने जीवन काल में उन बडें-बडें विद्वानों, अध्यापकों और शोधकर्ताओं को देखा है जिन में कश्मीर के विद्वान पण्डित भी शामिल हैं जो संस्कृत भाषा, वेद, शैवदर्शन, संस्कृति इतिहास और षट्शास्त्र के मूर्धन्य विद्वान थे लेकिन अभिव्यक्ति के कौशल और नैपुण्य से वंचित। वे इतने महान थे कि उन में से एक महापुरुष ने स्वयं मुझ से बातें करते समय अपनी इस कमज़ोरी का स्पष्ट शब्दों में उल्लेख किया। कश्मीरी भाषा में हम इसे 'वरतावुन' कहते हैं।

पण्डित प्रेम नाभ भट्ट को माँ सरस्वती ने अद्‌भुत वाक्-शक्ति प्रदान की थी। जिन्होंने भट्ट साहब को सुना है। विशेषकर अनन्तनाग के न्यायालय में बहस करते हुए अथवा नागडंडी में किसी धार्मिक-सामाजिक या सांस्कृतिक विषय पर बोलते हुए वे मेरे अभिप्राय को भली भाँति समझ सकते हैं। शब्दों द्वारा अपने विचार अथवा चिन्तन को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करने की प्रेमनाथ में अद्‌भुत क्षमता थी। वे शब्दों के व्यवहार से श्रोता को न केवल प्रभावति करते थे अपितु अपने आकर्षण के पाश में बान्धकर मन मुदित भी कर देते थे। मैं इस को दैवी शक्ति मानता हूँ। निरन्तर अभ्यास से इस शक्ति का उत्तरोतर विकास अवश्य होता है लेकिन जिस के पास मूल प्रवाहित स्रोत ही न हो उस में विकास की सम्भावना नहीं। मैं इस बात को बुद्धिजीवियों तक ही सीमित रखना चाहता हूँ।

**एक छविचित्र व्यक्तिगत जीवन का**

सन् 1953 से सन् 1989 ई० – लगभग छत्तीस वर्षों तक भट्ट साहब जीवन संघर्ष में सक्रिय रहे। सन् 1953 ई० में गाँव सॉली तहसील अनन्तनाग निवासी पण्डित गोविन्द जू राज़दान की पुत्री कान्ता जी के साथ प्रेम नाथ का विवाह हुआ और कर्तव्यनिष्ठ

जीवन में गार्हस्थिक जीवन का सुख चैन और माधुर्य घुल गया। भट्ट साहब की रूपाकृति, पहनावे और वेशभूषा का ध्यान पूर्वक निरीक्षण करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि जीवन में वे अवश्य रसिक रहे होंगे। यौवन काल में साज–सज्जा आख़िर किसे अच्छी नहीं लगती। वेशभूषा के मामले में उन के सुपुत्र कश्मीरी लाल जी भी सजधज कर अदालत में चेहल कदमी करते दिखाई देते हैं।

शीतकाल में तिलकधारी भट्ट साहब (टाईनुमा गुलूबन्द के साथ) के सिर पर फर की टोपी मुवक्किल की आशा का प्रतीक बन चुकी थी। कश्मीरी पण्डित जो फर की टोपी पहनते थे उस की बनावट मुस्लिम कराकुली टोपी से तनिक भिन्न होती है। यहाँ भी हम ने अपनी पहचान को सुरक्षित रखने का प्रयास किया है।

**श्रीमद्भगवद् गीता तथा कर्मयोगी भट्ट साहब :-**

मैं पुनः भट्ट साहब के व्यक्तित्व में निहित एक और विशिष्ट गुण क़ी ओर आप का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ। भट्ट साहब को श्रीमद्भगवद् गीता पर अटूट विश्वास था। वे इसे एक दैवी प्रेरणा स्रोत के रूप में शक्ति का अनन्य भण्डार समझ कर मान्यता प्रदान करते थे। वे नित्य श्रीमद्भगवद् गीता का सस्वर पाठ करते थे, उन में गीता संदेश को अंग्रेज़ी, उर्दू या कश्मीरी भाषा में व्याख्यायित करने की अद्भुत क्षमता थी। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि भट्ट साहब एक कर्म योगी सन्त थे। मैं आदरणीय फादर प्रद्युम्न के. जोजुफ धर के इस कथन से पूर्ण सहमत हूँ कि –

"His selfless services to people of all hues shall long be remembered by ever those who knew him remotely. Saints show a great sense of persistence, what is called in most traditionally pious terms perserverance......... The saint is one who does good with out the reinforcement of praise or vision of good results. Suchwas Pandit Prem Nath Bhat - Martyre and saint of Kashmir".

"Martyr Pandit Prem Nath Bhat - a tribute'

भट्ट साहब को गीता जी के कथ्य पर अटूट विश्वास था। वे निस्संदेह एक कर्मयोगी थे और निस्वार्थ भाव से अपने कर्तव्य कर्म में दत्तचित्त लगे रहते थे। उन की नस–नस में रक्त की प्रत्येक बूँद के साथ प्रवाहित है– गीताजी का विवेकाधृत ज्ञान अमृत।

श्री वेद व्यास जी ने महाभारत में गीता जी का वर्णन करने के उपरान्त लिखा है :–

**'गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्वि निः सृता।।'**

इस गीता शास्त्र पर मनुष्य मात्र का अधिकार है। भट्ट साहब अनासक्त भाव से निष्काम कर्म साधना में विश्वास रखते थे। रागद्वेष रहित कर्म करने की प्रेरणा उन्हें श्रीमद्भगवद् गीता से ही प्राप्त हुई है। आत्म ज्ञान एवं उद्धार तभी सम्भव है जब मनुष्य फल की इच्छा न करते हुए अपने कर्तव्य कर्म को धर्म की संज्ञा देकर निबाहनें की लगातार चेष्टा करे। कर्मफल के त्याग से परमपद की प्राप्ति, मोह का नाश होने से वैराग्य की प्राप्ति, बुद्धि की स्थिरता से योग की प्राप्ति तथा राग द्वेष रहित इन्द्रियों द्वारा कर्म करने से अन्तः करण शुद्ध होकर बुद्धि स्थिर होने की स्थिति – इन समस्त सूक्ष्म विचार बिन्दुओं से भट्टसाहब परिचित थे। वे केवल गीता जी पढ़ते ही नहीं थे अपितु इस के मूल कथ्य को व्यवहारिक जीवन में अपनाकर चलते थे। यही गीता उपदेश का क्रियान्वयन कहलाता है। वे अन्याय के विरुद्ध निरन्तर संघर्षरत रहे। जीवन के इस रण क्षेत्र में निरन्तर युद्ध चलता रहता है। भट्ट साहब वर्षों आहुति चढ़ाते रहे और अन्त में अपने प्राणों की आहुति चढ़ा कर कूच कर गये। भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को जो उपदेश दिया था भट्ट साहब ने अर्जुन की भूमिका में उस उपदेश

को ग्रहण किया और प्राणाहुति देकर अमर हो गये।

**'हतोवा प्राप्स्यसि स्वर्गं, जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।**
**तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय, युद्धाय कृत निश्चयः।।'** 2/37

बन्धुवर! प्रेमनाथ आजीवन अपने कर्तव्यकर्म में लगे रहे। उनके मन मस्तिष्क में कहीं भी वर्ग, धर्म, सम्प्रदाय या जाति भेद का विचारनहीं जागा। यही तो महापुरुष के पुरुषार्थ का बड़प्पन है। उन्हें विश्वास था कि कर्म न करने की अपेक्षा कर्म करना श्रेष्ठ है क्योंकि कर्म न करने से शरीर निर्वाह भी सिद्ध नहीं होता है। यही कारण है कि न्यायालय के भीतर कर्तव्यनिर्वाह ही उन की नज़रों में कर्म की सम्पूर्ण सर्वाङ्ग परिभाषा नहीं थी। कभी नागडंडी अच्छाबल, कभी विवेकानन्द केन्द्र अनन्तनाग, कभी नागबल प्रबन्धक कमेटी अनन्तनाग, तो कभी युवक सभा कार्यालय शीतलनाथ श्रीनगर, कभी अन्य जाति बन्धुओं के धर्म सम्मेलनों में उपस्थिति, तो कभी विचार गोष्ठियों का आयोजन और कभी लेखन कार्य तो कभी गहन अध्ययन – भट्ट साहब हर समय किसी न किसी काम में व्यस्त और मस्त दिखाई देते थे क्योंकि श्रीमद् भगवद्गीता से उन्हें प्रेरणा मिली थी कि :–

**'नियतं कुरु कर्म त्वं कर्मज्यायो ह्यकर्मण :।**
**शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्धयेदकर्मणः।।** (3/8)

उन्हें विश्वास था कि अच्छी प्रकार आचरण किये हुए दूसरे के धर्म से गुणरहित भी अपना धर्म उत्तम है। 'धर्म' को उन्होंने कर्तव्यकर्म के रूप में स्वीकारा। उचित अनुचित का ध्यान रखते हुए तथा दृढ़ता के साथ निष्ठा और विश्वास को बल प्रदान करते हुए कर्मपथ पर अग्रसर होना साधारण बात नहीं है। हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि भट्ट साहब धर्म निष्ठ होते हुए भी सर्वजनहित मानवोत्थान के हेतु आजीवन संघर्ष रत रहे। यहाँ हिन्दू और मुसलमान से कहीं अधिक इन्सान महत्त्वपूर्ण हो जाता है। भट्ट

साहब को इसी इन्सान पर अटूट विश्वास है जो धार्मिक संकीर्णताओं से ऊपर उठकर व्यापक स्तर पर बन्धुत्व की भावना के साथ जुड़ जाता है।

मेरी अपनी मान्यता यह है कि धर्माचरण पर दृढ़ विश्वास रखने वाला एक बुद्धिजीवी अन्धविश्वासी नहीं हो सकता। ज्ञान, विवेक और कर्म—तीनों मिल कर उस के व्यक्तित्व को महिमा—मंडित करते हुए सर्वजनाकर्षण का केन्द्र बना देते हैं। भट्ट साहब को अपने धर्म पर अटूट विश्वास है। जो उसे कर्मरत जीवन जीने की प्रेरणा देता है यही कारण है कि श्रीमद्भगवद् गीता का प्रत्येक श्लोक उन की रक्त शिराओं को गति प्रदान करता है। उन्हें कर्मों के फल की स्पृहा (अभिलाषा) नहीं। वे कर्म को विवेक की तुला पर तोल कर तथा व्यवहार बुद्धि से परखकर वरणीय (ग्राहय) अथवा त्याज्य सिद्ध करते हैं।

वे ज़िन्दगी के महाभारत में कानून के धनुष—गाँडीव को धारण किये हुए अर्जुन हैं जिन के कानों में श्री कृष्ण की श्रवण प्रिय ध्वनि गूँज रही थी –

**'न मां कर्माणि लिम्पन्ति न में कर्मफले स्पृहा।**
**इति माँ योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते।। (4/14)**

भट्ट साहब –'कर्म', 'अकर्म' और 'विकर्म' तोनों से परिचित थे। कर्म निर्वाह में अहंकार का कोई मूल्य नहीं। यह तो वास्तव में मानसिक विकार है जो देखते ही देखते विनाश का कारण बन जाता है। अतः निस्वार्थभाव से निरहंकार निरन्तर कर्म करते हुए यह मानना कि 'मैं ने कुछ नहीं किया है' अथवा 'मेरा इस में कोई योग नहीं',। मैं तो केवल एक हेतु हूँ। यह 'अकर्मक' का स्वरूप है', अहंकार रहित की हुई चेष्टाओं का स्वरूप। तनिक इस बात को भट्ट साहब के संदर्भ में देखिये। निरन्तर कर्मरत रहते हुए भी कभी उन के व्यक्तित्व में "मैं" तत्त्व प्रधान नहीं रहा और कभी

उन्होंने निषिद्ध कर्म के साथ अपने आप को नहीं जोड़ा है क्योंकि उन्हें विकर्म की सही पहचान थी। मैंने इसी लिये कहा कि भट्ट साहब के व्यक्तित्व में ज्ञान, विवेक और कर्म तीनों तत्त्व त्रिवेणी के रूप में प्रवाहित हैं। एक बार फिर श्रीमद्भगवद् गीता का यह कथन उन्हें सद्मार्ग की ओर प्रेरित करता है –

**'कर्मणोह्यपि बोद्धव्यं, बोद्धव्यं च विकर्मणः।**
**अकर्मणश्च बोद्धव्यं, गहना कर्मणो गतिः'** (4/17)

**राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, राम कृष्ण महा सम्मेलन तथा प्रेमनाथ भट्ट**

पण्डित प्रेमनाथ भट्ट राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के एक समर्पित सिपाही होने के साथ–साथ प्रत्येक कश्मीरी के हितैषी, उद्धारक और शुभेच्छुक थे। यही उन की महानता है। अपने जीवन के उषाकाल में ही प्रेमनाथ भट्ट राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की आत्मोत्सर्ग प्रधान विचार धारा से प्रभावित होकर स्वयंसेवक के रूप में कार्यरत रहे। यह काम कश्मीर के अनन्तनाग ज़िले में अंजाम देना कोई साधारण बात नहीं थी। यह मृत्यु–आहवान से कुछ कम न था। युवा जाति बन्धुओं को संगठित कर उन्हें षड़यंत्र प्रधान राजनीतिक दलदल के प्रति सचेत रहते हुए तथा राष्ट्र भक्त के रूप में कर्तव्य निर्वहण की प्रेरणा देते हुए भट्ट साहब ने अल्पसंख्यक जन मानस में आत्मगौरव की भावना जगा दी। स्वाभिमान और राष्ट्र सम्मान एक दूसरे के पर्याय बनगये। राष्ट्र की एकता और अखंडता को सुरक्षित रखने के हेतु भट्ट साहब ने जान हथेली पर लेकर अपनी लेखनी का भरपूर प्रयोग किया है। (आगे इस की विस्तार से चर्चा होगी) भट्ट साहब स्वर्गीय डॉ. केशव राव बलीराव हेडगेवार की विचारधारा से पर्याप्त प्रभावित हुए थे। सामाजिक कर्तव्य के निर्वहण में उन्होंने पूजनीय हेडगेवार जी को गुरु के रूप में स्वीकारा है। वही उन के मूल प्रेरणा स्रोत रहे हैं। इस के

अतिरिक्त पूजनीय माधवराव सदाशिव राव गोलवलकर कृत 'Bunch of thoughts' ने भी उन्हें सामाजिक चिन्तन के प्रति प्रेरित किया है।

युवावस्था में ही भट्ट साबह ने एक वकील के रूप में अनन्तनाग बार (न्यायालय) में पर्याप्त ख्याति अर्जित की। इलाके में दूरदूर तक उन की चर्चा होने लगी और वे नागडंडी (अच्छाबल–अनन्तनाग कश्मीर) में स्थापित 'रामकृष्ण महासम्मेलन के संस्थापक (Founder) स्वामी अशोकानन्द जी के सम्पर्क में आये। मैं इसे भट्ट साहब के जीवन की एक महत्त्वपूर्ण घटना मानता हूँ। स्वामी जी दिव्य प्रतिभा सम्पन्न महापुरुष थे उन में आदमी को पहूचानने की अद्‌भुत क्षमता थी। वे धीरे–धीरे भट्ट साहब की कर्तव्य निष्ठा, देश प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना से प्रभावित हो उठे और दोनों मिलकर एक निश्चित कार्य योजना के अंतर्गत काम करने लगे। भट्ट साहब स्वामी जी की अध्यात्म शक्तियों से बेहद प्रभावित हुए और स्वामी जी भट्ट साहब के अदम्य उत्साह, सेवाभाव और विवेकशील बुद्धि–वैभव की खुल कर प्रशंसा करने लगे।

देहत्याग से पूर्व स्वामी जी ने लिखित रूप में यह इच्छा संकल्प (will) किया था कि उन के बाद 'रामकृष्ण महा सम्मेलन' नागडंडी अच्छाबल को 'रामकृष्ण मिशन बिलोर मठ' या 'स्वामी विवेकानन्द रॉकम्यमोरियल' कन्याकुमारी के सुपुर्द किया जाये और श्री प्रेम नाथ भट्ट को उन्होंने अपने इच्छा संकल्प का कानूनी निष्पादक (Executor) नामज़द किया। स्वामी अशोकानन्द जी के देहावसान के बाद विवेकानन्द रॉकम्यमोरियल केन्द्र' कन्याकुमारी के संस्थापक श्री एकनाथ राणाडे ने विवेकानन्द केन्द्र के प्रतिनिधि के रूप में 'रामकृष्ण सम्मेलन' नागडंडी– अच्छाबल को अपने अधिकार में लिया और इस के निष्पादन में भट्ट साहब का योगदान सर्वोपरि रहा है। उन्हें सर्वसम्मति से नागडंडी आश्रम का सभापति चुना गया। भट्ट साहब स्वामी विवेकानन्द की सांस्कृतिक चेतना, ज्ञानगरिमा, हिन्दुत्व और देश प्रेम की भावना तथा भारत के

गौरवमय अतीत के इतिहास–बोध से बेहद प्रभावति हो उठे थे। उन्होंने स्वामी विवेकानन्द को जीवनादर्श के रूप में स्वीकारा और उनकी ज्ञान गरिमा की चर्चा करते हुए युवा जन मानस को लक्ष्य प्राप्ति के हेतु उत्साहित करते रहे। श्री एकनाथराणाडे, प्रोफ़ेसर के. एन. वासवानी (उपप्रधान विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी) तथा जी. वासुदेवा (संयुक्त प्रधान सचिव, विवेकानन्द केन्द्र कन्या कुमारी) सुश्री लक्ष्मी दीदी (प्रधान, विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी) डॉ० नगेन्द्र (वैज्ञानिक नासा), श्री बाला कृष्णन (प्रधान सचिव, विवेकनन्द केन्द्र कन्याकुमारी) स्वर्गीय श्री दता राम के सम्पर्क में आकर भट्ट साहब की लोकोपकारी शक्तियों का उत्तरोतर विकास हुआ और राष्ट्र हितैषियों को लगा कि कश्मीर की उपजाऊ धरती में भी राष्ट्रीयता के बीज अवश्य अंकुरित हो उठेगा। केन्द्र के संयुक्त प्रधान सचिव जीवासु देवा के शब्दों में –

"Though a Nationalist to the core, being highly spiritual Pandit Prem Nath Ji loved the entire humanity. He was an authority equally on Quran, Bhagwat Gita and many other scriptures. He was firm in his convictions without being a fanatic".

"Pt. Prem Nath Bhat' - The man with a Mission compiled by B.K. Koul on behalf of Memorial committee'. (Page A-5)'

परमादरणीय एक नाथ जीं रानाडे ने भट्ट साहब के विषय में पहले ही लिखा था –

'Wheels to his legs, Sugar on his tongue, ice on his head and flame of Idealism is his heart'.)

वही सन्दर्भ – पृ० A-5

मैं समझता हूँ कि काफ़ी सोच–समझ कर ही भट्ट साहब नागडंडी अच्छाबल स्थित विवेकानन्द केन्द्र के साथ जुड़ गये होंगे। दक्षिण–कश्मीर में अल्पसंख्यक युवामानस को संगठित करने का यही एक उपाय था। प्रदेश के विभिन्न राजनीतिक दल

विशेषकर भारत विरोधी शक्तियाँ अल्पसंख्यक को किसी भी स्थिति में संगठित शक्ति के रूप में नहीं देखना चाहते थे। धीरे धीरे अल्पसंख्यक खंडित होकर बिखर रहा था। पढ़ा लिखा अधिकार वंचित समाज टूट रहा था। इस असहाय समाज को अधिकार प्राप्तिहेतु संघर्ष करने के लिये तैयार करना था। व्यापक स्तर पर राष्ट्रीय भावना का विकास, बनते बिगड़ते राजनीतिक समीकरण (Political Equations) एवं अलगाववादी तत्त्वों के विरूद्ध सचेत होकर राष्ट्र हित और जाति हित के विषय में चिन्तन करना समय की सब से बड़ी आवश्यकता थी जिसे भट्ट साहब ने महसूस किया और नागडंडी के विवेकानन्द केन्द्र को अनुशासन बद्ध जीवन जीने के हेतु एक प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में व्यवहार में लाकर महिमामंडित किया।

शारीरिक विकास के साथ साथ मानसिक जागरूकता भी नितान्तावश्यक है। दक्षिण कश्मीर में उन दिनों में भी 'लाल सलाम' के स्वर हवा में गूँज रहे थे। अल्पसंख्यक युवामानस इस ओर आकर्षित हो रहा था और धीरे धीरे हमारे सांस्कृतिक मूल ध ारती से उखड़ कर अलग हो रहे थे। एक जागरूक योद्धा के रूप में भट्ट साहब ने हवा का रुख ही बदल दिया और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद (Cultural Nationalism) का झण्डा गाड़ कर सर्जन और नवनिर्माण के हेतु महत्त्वपूर्ण भूमिका निबाही।

भट्ट साहब के इस योगदान को न केवल युगीन संदर्भो के परिप्रेक्ष्य में देखने की आवश्यकता है अपितु राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय घटनाचक्र को ध्यान में रखकर इस का आकलन करना होगा। उन्होंने तब उन परछाइयों को भाँप लिया था जिन्हें आज हम अपनी नग्न आँखों से देख रहे हैं।

### एडवोकेट प्रेमनाथ भट्ट तथा राजनीति के बदलते रंग

स्वर्गीय प्रेम नाथ भट्ट पेशे से वकील थे। एक जाने माने

कुशाग्रबुद्धि सम्पन्न अधिवक्ता जिसने बार में प्रवेश करते ही बुद्धिजीवियों और वकील राजनेताओं का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया था। यह वह ज़माना है जब निर्बोध कश्मीरियों को अपने नेताओं पर अटूट विश्वास था। राजनीति लगातार रंग बदल रही थी। धारा 370 का कवच पहने और 'अटूट अंग' की दुहाई (घोषणा, मुनादी) देते तामझाम के साथ जशने कश्मीर मनाते हुए भारत राष्ट्र का आर्थिक दोहन हो रहा था। धर्मान्ध पड़ोसी चतुराई के साथ कश्मीर में अपनी जड़ें मज़बूत कर रहा था। महाज–ए–रायशुमारी (Plebiscite Front) ने जन्म लिया और एक बार फिर दिल की बात ज़ुबान पर आही गयी ऐसे विषाक्त वातावरण में राष्ट्र विरोधी तत्त्वों की इच्छा के विरूद्ध देश भक्ति का झण्डा गाड़ कर तथा सीना तान कर खड़ा होना बड़े साहस का काम था और दक्षिण कश्मीर में 20 वीं शताब्दी के अन्तिम कालखण्ड में भट्ट साहब ने हतोत्साहित जनमानस में संकल्पबद्ध जीवन जीने की जोत जगाकर एक राष्ट्रवीर की भूमिका का निर्वहण किया। अपनी असाधारण योग्यता, कर्त्तव्य निष्ठा, देश प्रेम की भावना, सांस्कृतिक जागरूकता', हिन्दुत्व के प्रति समर्पण, इतिहास बोध और कुछ कर दिखाने की बलवती इच्छा ने प्रेम नाथ को जन प्रतिनिधिके रूप में लोक प्रतिष्ठा प्रदान की।

एक वीर रण बाँकुरा रण क्षेत्र में प्राणाहुति को जीवन की महानतम उपलब्धि के रूप में स्वीकारता है लेकिन उस की यह इच्छा होती है कि कर्म संघर्ष में शत्रु का वार सहते हुए वक्ष छलनी हो, पीठ नहीं। प्रेमनाथ ने भी एक सिर–फिरे आतंकी का वार वक्षपर लिया, पीठ पर नहीं। जीवन के अन्तिम क्षण तक कर्मरत रहते हुए एक, बहादुर सिपाही के रूप में उन्होंने 'निज़ामे मुस्तफा' के पक्षधर नरभक्षी छद्म आतंकी के प्रहार को अपनी प्राणाहुति से निस्सार (worthless) कर दिया। मैं भट्ट साहब के पेशे के बारे में बात कर रहा था। 36 वर्षों तक उन्होंने वकालत की। वे एक जाने

माने अधिवक्ता, न्याय–विद्, तर्क–वितर्क की प्रस्तुति में माहिर, बहसो तम्हीस (वादविवाद) में विशेषज्ञ और सब से बड़कर एक सच्चे इंसान दोस्त और मानवतावादी थे।

कई लोगों का कहना है कि प्रातः ईशवन्दना करते समय आज के ज़माने में ईश्वर से दो महत्जनों से रक्षार्थ वन्दना करनी चाहिये – एक राजनेता से तथा दूसरे वकील से, इस के पेशे में श्याम को श्वेत कहना और श्वेत को श्याम तो आम बात है। इस की नज़र आप की जेब पर है यहाँ माल बोलता है, डंके की चोट बोलता है। आजकल लाखों और करोडों की बात चलती है। वकील महाशय देखते ही देखते शब्द जाल में आदमी को फंसा लेते हैं और कुछ क्षणों के लिये बहीशत (स्वर्ग) की सैर कराकर केस को एक दो पेशियों में सुलझा देने का आश्वासन देकर जिन्दगी भर के लिये उलझा देते हैं।

लेकिन मैं ईमानदारी के साथ कहना चाहता हूँ कि यहाँ भी अपवाद (Exceptions) हैं और भट्ट साहब उसी वर्ग के माहिर कानूनदाँ थे। मेरे पास इस बात के प्रमाण हैं कि स्वर्गीय टीका लाल टॅपलू अपने मुहल्ले के किसी भी मुवक्किल से फीस नहीं लेते थे चाहे वह हिन्दू होता था या मुसलमान। बिना फीस लिये वे न्यायाधीश के सम्मुख उपस्थित होकर न्याय दिलाने में अपनी भूमिका निबाहते थे। यही बात भट्ट साहब के विषय में भी सत्य है। जहां उन्हें इस बात का विश्वास होता कि मुवक्किल गरीब, लाचार, विवश तथा निराश्रय है वहाँ वे सामने आकर अपनी जेब से पैसे चुका कर केस लड़ते थे। यहाँ कभी उन्होंने यह नहीं देखा है कि मुवक्किल हिन्दू है या मुसलमान। भट्ट साहब वकालत के पेशे में भी प्रकाश स्तम्भ के समान एक दिव्यादर्श के रूप में सब के आकर्षण का केन्द्र बन चुके थे। वे कंटीली झाडियों में खिले हुए एक वन–पुष्प के समान थे ज़ो अपनी सुवास से असंख्य चाहने वालों को शरीर बिन्धवाने के लिये विवश करता है। मैं ने ऐसे

सैंकडों लोगों को देखा है जो करोड़ों रूपये की सम्पत्ति छोड़ कर खाली हाथ चले गये। लेकिन उस सम्पत्ति के संग्रह का इतिहास न बुझने वाली तृष्णा और लालसा की तड़फड़ाहट का इतिहास है। इस में कोई सन्देह नहीं कि प्रेमनाथ ने वकालत के पेशे में कमाल कर दिखाया था। वकील साहब –

१. चतुर थे, पठित थे और जानकार थे।

२. माहिर–ए–कानून (न्यायविद्) थे।

३. बहस करने में समर्थ थे।

४. तर्क देने में माहिर

५. वादीदल (मुद्दई) या प्रतिवादीदल (मुद्दआअलैह) को पछाड़ने में सक्षम।

६. बहुत परिश्रमी।

७. और माल कमाने में निपुण थे।

मैं इन गुणों का श्रेय अनन्तनाग के एक नामवर वकील स्वर्गीय शम्भू नाथ धर को देना चाहूँगा। इन्हीं के दिशा निर्देश में भट्ट साहब ने अनन्तनाग में वकालत शुरू की। पण्डित शम्भू नाथ धर उस ज़माने में अनन्तनाग के जाने माने वकील थे। एक कनिष्ठ वकील (Junior Lawyer) के रूप में पेशे की बारीकियों से धर साहब ने ही इन्हें परिचित कराया। इस उत्साही युवा वकील अर्थात् धूलभरे हीरे को इतना पोंछा कि आज शहादत के वर्षों बाद भी उस की चमक अज्ञान के गहन तमस को प्रभावहीन कर देती है। श्री शम्भुनाथ धर वकालत के पेशे में उन के पहले गुरू थे। इस के अतिरिक्त स्वर्गीय दामोदर लाल भट्ट (दम लाल भट्ट) जो ज़िला आनन्नाग में वकील दम काक के नाम से प्रसिद्ध थे, से भी भट्ट साहब काफ़ी प्रभावित और प्रेरित रहे हैं। दम् काक ने भट्ट साहब को पेशे का सम्मान करते हुए जीवन जीने की प्रेरणा दी। प्रेमनाथ अपनी

असामी (मुवक्किल) के प्रति हर समय वचनबद्ध रहते थे। उस के हितों की रक्षा करना प्रेमनाथ का धर्म था। चाहे मुवक्किल रामजू थे या रहीम जू, दिलावर खान थे या दिलावर सिंह, भूषण लाल कौल थे या अब्दुलरशीद कौल, टीकालाल कान्दरू थे या अम् लाल दाँदरू (कुँजड़ा) ख्वाजा साहब थे या पण्डित साहब – वे केवल अपने मुवक्किल के हितों की रक्षा के हेतु न्यायालय में प्रवेश करते थे। जाति, वर्ग सम्प्रदाय के भेदभाव से ग्रसित मन के साथ उस ने कभी किसी केस की पैरवी नहीं की है। भट्ट साहब ने कभी भी अपने पेशे के साथ बेवफ़ाई नहीं की। यह उन के व्यक्तित्व की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता रही है।

भट्ट साहब के जीवन का गहन अध्ययन करने के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि वे एक कर्तव्यनिष्ठ सिपाही होने के साथ साथ प्रत्येक कश्मीर वासी के हितैषी, उद्धारक और सहायक थे। यही उन की महानता थी। अनन्तनाग बार में वे मुस्लिम वकीलों के बहुत करीब थे। वे उन के प्रशंसक थे। मेरा संकेत मिर्ज़ा मुहम्मद अफ़ज़ल बेग साहब की ओर है। भट्ट साहब अपने पेशे के प्रति समर्पित थे और बेग साहब उन की कानूनी महारत (निपुणता) और चारित्रिक गुणों के प्रशंसक। राजनीतिक दृष्टि से दोनों कुछ समय के लिय, एक साथ रहे जब भट्ट साहब नेशनल कांफ्रेंस के सदस्य बने थे। लेकिन यह रिश्ता अधिक समय तक नही रहा। उन्होंने सन् 1957 ई० में नेशनल कांफ्रेंस की सदस्यता ग्रहण की और चारवर्ष के बाद सन् 1961 ई० में इस राजनीतिक दल से अलग हो गये। सम्भवतः अल्पसंख्यकों के प्रति इन की व्यवहार नीति से वे निराश हो चुके थे। उन्हें विश्वास था कि अन्याय के विरूद्ध संगठित होने के लिये किसी के चरण स्पर्श करने से कहीं अधिक न्याय के पथ पर शीशदान देना उपयोगी और सार्थक सिद्ध होगा। वे अपने निजी हित के लिये नहीं सर्वजन हित के लिये आजीवन संघर्षरत रहे।

दोनों की विचारधारा परस्पर एक दूसरे से भिन्न थी। पर बेग साहब विधिशास्त्री थे और उनमें जौहरी की परख (पहचान) भी थी, अतः मुक्त कंठ से भट्ट साहब की प्रशंसा करते थे और कभी कभी उन से मशविरा (मंत्रणा, सलाह) भी लेते थे। इस के अतिरिक्त ज़िला अनन्तनाग के अन्यचर्चित वकीलों के साथ भी उन के सम्बन्ध सौहार्द पूर्ण थे। जिनमें सर्वश्री दामूदर लाल भट्ट, नारायण जू बख़्शी, अब्दुल मजीद खतीब, गुलाम रसूल कोचक, गुलाम नबी कोचक, प्यारे लाल हण्डू, शम्भू नाथ धर, मिर्ज़ा याकूब बेग, नन्द लाल शाह, मक्खन लाल, फोतेदार, नीलकंठ जुत्शी, गुलाम नबी देवा, गुलाम नबी हागरू, मनोहर नाथ कौल, हबीब उल्लाह लावे (कुलगाम) उल्लेखनीय हैं।

भट्ट साहब विधिशास्त्र के ग्रन्थों का विधिवत अध्ययन करते ही रहते थे लेकिन अर्थशास्त्र, राजनीति, धर्मशास्त्र, सांस्कृतिक इतिहास तथा कश्मीर के भूत और वर्तमान के विषय में भी उन्होंने गहन अध्ययन किया था और निरन्तर अध्ययन में लगे रहते थे। श्रीमद्भगवद् गीता तो उनका प्रेरणा स्रोत था। महात्मा गांधी, बाल गंगाधर तिलक, स्वामी विवेकानन्द एवं सर्वपल्ली राधा कृष्णन् ने गीता जी के विषय में जो विचार व्यक्त किये हैं वे उनसे पूर्ण परिचित थे। भगवद् गीता से सम्बंधित समस्त टीका ग्रन्थों का उन्होंने अध्ययन किया था। श्रोता गण मुग्ध हो जाते थे जब भट्ट साहब गीता जी पर अपने विचार व्यक्त करते अथवा भाषण देते अथवा किसी श्लोक की व्याख्या करते। वेरीनाग कशमीर के मूल निवासी श्री हृदयनाथ पण्डित जो कुछ वर्ष पूर्व दूर संचार विभाग से इंजीनीयर के रूप में सेवा निवृत्त हुए ने मुझे बताया कि 20वीं शताब्दी के अन्तिम काल खण्ड में कश्मीर में दोही प्रतिभासम्पन्न ज्ञानवान (scholar) वकील थे जो घण्टो भगवद् गीता के दार्शनिक आध्यात्मिक एवं साधनात्मक पक्ष पर बात कर सकते थे। एक थे अनन्तनाग निवासी एडवोकेट प्रेमनाथ भट्ट और दूसरे थे बारामुला

बार के मशहूर एडवोकेट पण्डित गोपी नाथ गरियाली जिन्हें लोग फ्यल्ट साहब भी कहते थे। गीता प्रवचन में ये दो महानुभाव सिद्धहस्त थे। भट्ट साहब प्रायः कहते थे कि 'मेरे वक्ष में प्रवाहित रक्त की गर्माहट भगवद् गीता की कर्म–'प्रेरणादायक शक्ति का परिणाम है।' इतना ही नहीं भट्ट साहब ने कुरान शरीफ़ का भी गहन अध्ययन किया था। वे इस्लामिक धर्मशास्त्र (Islamic Theology) से पूर्ण परिचित थे और सभा गोष्ठियों में विभिन्न धर्म–विद्धान्तों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर सब को आश्चर्यचकित कर देते थे।

शहीद होने से कुछ मास पूर्व अनन्तनाग (अशाहजीपोरा) में आयोजित 'जमात–ए–इस्लामी' की एक मजलिस (सभा) में भट्ट साहब ने कुरान पाक के फ़लसफ़े पर ढाई घण्टे का भाषण दिया। यही कारण है कि अनंन्तनाग के जमाते इस्लामी के कई सदस्यों की आँखें उस दिन नम हुई जिस दिन निहत्थे भट्ट साहब की उष्णरक्तधारा ने अनन्तनाग की सरज़मीं को चूमा। इलाके के दो मुसलमान बन्धु श्री अब्दुल मजीद ख़तीब और श्री गुलाम नबी देवा शोक व्यक्त करने घर आये। जमात–ए–इस्लामी के एक कार्यकर्ता की पत्नी भी शोक व्यक्त करने साहस करके घर आई तथा दूसरे दिन दाह संस्कार के समय जस्टिस ए०क्यो० परे एवं तत्कालीन राज्यमंत्री मुहम्मद अकबर गनाई (डूरू) नागबल में उपस्थित रहे। भट्ट साहब के शेष मित्रजनों और चाहने वालों को खुदा सलामत रखे। भट्ट साहब हर समय एक अच्छी किताब की तलाश में रहते थे। बेहद व्यस्त होते हुए भी वे पुस्तक पढ़ने के लिये समय निकाल ही लेते थे। पुस्तक पढ़ कर अपनी प्रतिक्रिया कभी कभी लिखित रूप में भी व्यक्त करते थे। उन्हें अंग्रेज़ी भाषा पर असाधारण अधिकार था। वे न केवल एक प्रतिभा सम्पन्न वक्ता थे अपितु कलम के सिपाही भी थे।

जब कभी भरी अदालत में अपने केस के पक्ष में बहस करते

थे या दूसरे पक्ष के वकील द्वारा उठाई गई शंकाओं का उत्तर देते थे तो उन की योजना बद्ध प्रस्तुति, तर्क शक्ति, केस को सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने की क्षमता, कानूनी दाँवपेच (strategical moves, manoeuvres) तथा न्याय शास्त्र (Jurisprudence) का युक्तियुक्त व्यवहार देखते ही बनता था। भाषा पर असाधारण अधिकार होने के कारण शालीनता की सीमाओं में रहकर व्यंग्य चोट तथा विपरीत अर्थ बोधक शब्दव्यवहार करनें में भट्ट साहब सिद्ध हस्त थे। कुलगाम कश्मीर के मूल निवासी सेवानिवृत्त जिला और सत्र न्यायाधीश श्री संतलाल त्यँगलू के शब्दों में –

'He was a lawyer of great qualities Par excellent Professinaly very sound , alive to social problems and politically agile.'

(14-8-2008 को जम्मू में त्यंगलू साहब से हुइ मेरी भेंट–वार्ता से उद्धृत)

जिस दिन बहस के लिए उन्हें न्यायलय में जाना होता था कई कनिष्ठ वकील यहां तक कि उनके सहयोगी वकील भी उनकी बहस सुनने के लिए कोर्ट में उपस्थित रहते थे। व्यावसायिक आचार शास्त्र (Professional Ethics) का पालन करते हुए वे अन्याय के विरूद्ध पूरी शक्ति के साथ अपना पक्ष प्रस्तुत करते थे। यही थी एक पेशावर (व्यवसायी) वकील की व्यावसायिक महारत (expertise) ।

## कश्मीरी पण्डित समाज एवं प्रेम नाथ भट्ट

मैं समझता हूँ कि यह उचित अवसर है कि अब प्रेम नाथ भट्ट की सामाजिक मान्यताओं पर विचार किया जाये। भट्ट साहब अल्पसंख्यक कश्मीरी पण्डित समाज के स्वर्णिम अतीत और दुर्दशा ग्रस्त वर्तमान से पूर्ण परिचित थे। वर्तमान में घटित घटना चक्र के दुष्टपरिणामों को अपनी आँखों से देख रहे थे। वही जन समाज जो एक सहस्र वर्ष पूर्व बहु संखयक कश्मीरी जन समुदाय के रूप

में सुखद जीवन जी रहा था आज अल्पसंखयक के रूप में अपनी जीवन श्वासें गिन रहा हैं। इतिहास ने यह कैसी करवट बदल ली। इस के लिए हिन्दू उतना ही उत्तरदायी है जितनी अन्य प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ हैं। रेंचन भौंट (कश्मीर ब्वट्) ने पहले हिन्दू बनने की ही इच्छा व्यक्त की थी। हम ने उसे रेंचनशाह बनने पर मजबूर किया। सुलतान सिकन्दर (1389-1413 ई०) और उसके मुखय मंत्री मलिक सैफ–उ–दीन की कट्टरवादिता औरंगजेब का हिन्दुओं के प्रति अमानवीय व्यवहार ज़ालिम अफगान गवर्नर जबार खां(1819 ई०) की बर्बरता पूर्ण हठ–धर्मिता(दुराग्रह). और हिन्दुओं का देश निष्कासन फरवरी–मार्च सन् 1986 ई० में दक्षिण कश्मीर में धर्मान्धों की विनाश लीला और अल्पसंख्यको के 46 देव स्थलों की अवमानना और फिर 1989-90 में लाखों की संख्या में हिन्दुओं का देश निष्कासन–

यह तो कश्मीर इतिहास के बदनुमा यथार्थ की कुछ घटनाएँ हैं–कोई इन्हें झुठला नहीं सकता।

भट्ट साहब कश्मीर इतिहास के हर युग से परिचित थे। जाति बन्धुओं की आर्थिक दुर्दशा बेरोजगारी और रूढिग्रस्त सामाजिक बन्धनों के निर्वाह की विवशता ने इस समाज की जीवन शक्ति को ही क्षीन कर दिया था। एक अल्पसंखयक जन मानस कई अप्राकृतिक खण्डों मे बंट चुका था जैसे ग्रामीण कश्मीरी पण्डित और नगर वासी कश्मीरी पण्डित, कारकुन कश्मीरी पण्डित और कर्म कांडी कश्मीरी पण्डित, नौकरी पेशा कश्मीरी पण्डित और खेतिहर कश्मीरी पण्डित, दिल्ली की पम्पोश कालोनी में रहने वाला कश्मीरी पण्डित और अस्तित्व की रक्षा के हेतु संघर्षरत कश्मीरवासी कश्मीरी पण्डित। समाज टुकडों में बट चुका था और दुर्भाग्य यह कि समाज से जुडे नेताजन हाकिमों की हाँ में हाँ मिला कर अपनी स्वामी भक्ति का परिचय देते हुए अपने ही समाज को ठग रहे थे।

भट्ट साहब ने अपनी आँखों से सब कुछ देखा, परखा, समझा

और फिर अपने आक्रोश को क्रियात्मक रूप प्रदान करने के हेतु समाज की युवाशक्ति को ललकारा और संगठित हो कर निस्वार्थ भाव से कर्मरत रहने की प्रेरणा दी। इस समाज में कई दुर्घटनाएँ निरंतर घट रही थी, मैं उन के विस्तार में जाना नहीं चाहता हूँ संकेत ही पर्याप्त होगा। अदालत में बिना फीस लिए केसों की पैरवी करना। गाँव गाँव जाकर जाति बन्धुओं कोसचेत करना संगठित होकर संघर्ष के हेतु प्रेरित करना, धर्म के मूल कथ्य और तथ्य पर विचार करना और रूढी आडम्बरों को त्याग देने के लिए जन मानस को तैयार करना – यही तो भट्ट साहब के सामाजिक संकल्पों का यर्थाथ है।

भट्ट साहब सच्चे अर्थो में एक समाज सेवक थे। यहाँ उन के व्यक्तित्व के अन्य आकर्षक पहलू गोण हो जाते थे और सेवा संकल्प प्रधान होकर कर्मरत रहने की प्रेरणा देता था। वे एक मार्गदर्शी शक्ति (Guiding Force) के रूप में गुप्त मनीषी (a hidden spirit) थे। वे चाहते थे कि समाज की समस्या का निदान सामाजिक सीमाओं के भीतर ढूँढा जाये।

भट्ट साहब गुप्त दानी थे। कहा जाता है कि अपनी आय का दस प्रतिशत और आवश्यकता पडने पर इससे भी अधिक धनराशि दान देते थे। चुपचाप किसी को कानो कान ख़बर किये बिना विवशजनों की आर्थिक सहायता करना विधवाओं का साहस बन्धाना, गरीब कन्याओं के विवाह की व्यवस्था करना, बच्चों को पुस्तकें खरीदनें के लिये धनराशी उपलब्ध कराना, सामाजिक उत्सवों में सक्रिय रूप से सम्मिलित होना तथा बिना फीस लिये मुक़द्दमा लड़ना कोई उन से सीखे।

पण्डित प्रेम नाथ भट्ट ने अपने जीवन काल में एक आदर्श हिन्दू समाज की स्थापना के हेतु भरसक प्रयास किये हैं। सन 1954 ई. में बख्शी गुलाम मुहम्मद के राज्यकाल में अनन्तनाग 'नागबल प्रबन्धक कमेटी' द्वारा आयोजित जन्माष्टमी उत्सव को

याद कीजिये। संदेह का काँटा चुबा बख़्शी साहब के ज़ेहन में। पीस ब्रिगेड (29/15) का हाहाकार, जन्मअष्टमी के उत्सव में मारकाट तथा प्रेम नाथ भट्ट अपने साथियों श्री बदरी नाथ कोल, श्री ब्रजनाथ भट्ट (ददरू) तथा श्री जिया लाला डासी के साथ नज़रबन्द। बख़्शी साहब का दमनचक्र सक्रिय हो उठा और अल्पसंख्यक अनादृत हुआ। इस से पहले भी हाकिम की लथाड़ से वह त्रस्त था। प्रेमनाथ ने इस चुनौती को स्वीकार किया और देश की न्याय व्यवस्था ने उन्हें संरक्षण प्रदान किया। यथार्थ बडा कडवा होता है। कहीं इसे सहन किया जाता है और कहीं यह असह्य हो जाता है। प्रेमनाथ ने अपने सिद्धान्तों के साथ कहीं समझोता नहीं किया वे न पदवी चाहते थे और न पद प्रतिष्ठा। वे तो एक सामन्य जाति सेवक के रूप में अपनी भूमिका निबाहते थे।

वे हाकिमों के जी हुजूर हरगिज़ न बने। कई बार हाकिमों ने उन के सामने प्रस्ताव/सुझाव पेश किये लेकिन वे दृढ़ता के साथ इन्हें ठुकराते रहे। उन्हें न डालर कमाने की इच्छा थी और न पौंड स्टरलिंग गिनने का शौक था। वे तो 'साग–भात' खाने वाले जानिमन (मेरी जान) थे। सहजता, सरलता और सचाई के पक्षधर। उन के लिये 'पों–पों मोटर, (29/15) का अपना इतिहास है जो बख़्शी गुलाम मुहम्मद युग से जुड़ा है।) ये जशनेकश्मीर बेमानी थे। वे तो धर्म क्षेत्र के संकल्पबद्ध महारथी अर्जुन थे और उनका धर्मक्षेत्र था अनन्तनाग, व्यवहारक्षेत्र समस्त कश्मीरी समाज, कर्मक्षेत्र अनन्तनाग बार और कर्त्तव्य क्षेत्र था सम्पूर्ण भारत। धार्मिक सहिष्णुता, बन्धुत्व, मानव प्रेम, शोषित, दलित और पीड़ित के प्रति सहानुभूति तथा 'सर्व धर्म समभाव' यही तो प्रेम नाथ की पहचान थी और इसी ने उन्हें सर्वजन प्रिय लोक हितैषी बना दिया था। मानव प्रकृति के दो रूप प्रायः हमारी नज़र में आते हैं। कुछ लोग उफनती नदिया के किनारे गरजती लहरों का आनन्द लेते हैं और प्रकृति के वैभव पर मुग्ध हो उठते हैं और कुछ लोग मौजेआब

होकर अर्थात पानी की लहरों में घुस कर किनारे ढूँढने का प्रयास करते हैं। प्रेम नाथ इसी वर्ग के उद्भट योद्धा थे। उन के लिये व्यक्ति महत्त्वपूर्ण नहीं था। बल्कि समाज को उन्होंने सर्वोपरि माना है। वे हम सब के लिये आजीवन संघर्षरत रहे। मैंने पहले ही संकेत किया है कि यदि वे चाहते तो किसी भी देशी विदेशी या स्वीज़ बैंक में माया को कैद करवाते लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। वे श्री और सौन्दर्ययुक्त लोकमाता महालक्ष्मी के उपासक थे।

प्रायः ऐसा देखा जाता है कि शीलवान, चरित्रवान और गुणवान व्यक्ति स्वतः जनाकर्षण का केन्द्र बन जाता है। प्रफुल्लित पुष्प भौंरों को अपने यौवन की छटा से आकार्षित करता है। काग़जी फूल देखने में तो बड़ा आकर्षक लगता है लेकिन जिन्दगी की महक और ताज़गी से वंचित होने के कारण गुलदान को भी बेरौनक कर देता है। प्रेमनाथ गुलदान का काग़ज़ी फूल नहीं है बल्कि कश्मीर की उपत्यका में स्वतः खिला हुआ सुवासित कश्मीरी गुलाब है।

'अतिथि देवों भवः' मेहमान तो देवता स्वरूप है। भट्ट साहब के घर पर रोज़ दो तीन मेहमान और कभी इस से भी अधिक संख्या में मेहमानों का आना चलता रहता था। उन की धर्मपत्नी श्रीमती कान्ता जी व्यवस्था करने में निरन्तर लगी रहती थी। समाज के हर वर्ग के लोग उन के यहाँ आते थे। भारत के अन्य प्रदेशों से भी अतिथि निरन्तर आते रहते थे और पण्डित साहब अतिथि सत्कार में कोई कमी रहने नहीं देते थे। कहने का अभिप्राय यह है कि समाज के हर वर्ग, सम्प्रदाय अथवा संस्था के सदस्यों के साथ भट्ट साहब निकट सम्पर्क में रहते थे और सदा सामाज़िक उत्थान के हेतु प्रयासरत दिखाई देते थे। एक कर्तव्य निष्ठ कर्म योगी के साथ–साथ वे एक आदर्श समाज सेवक भी थे। अल्प संख्याक समाज के तंत्र–तारक (प्रधान–नक्षत्र), नागबल अनन्तनाग

में स्थित अनन्त स्वामी के इच्छापुत्र, वितस्ता के लाड़ले पूत तथा ऋषि मोल के नूरे चश्म (प्रियपुत्र) निस्संदेह लाले बदख्शान थे पण्डित प्रेम नाथ भट्ट। (बदख्शाँ अफगानिस्तान में पैदा होने वाला पदमराग)

**जीवन के प्रति भट्ट साहब का दृष्टिकोण :-**

जीवन के प्रति भट्ट साहब का दृष्टिकोण सदा सकारात्मक रहा है क्योंकि वे जीवन जीने में विश्वास रखते थे। वे साभिमानी कश्मीरी पण्डित के रूप में ज़िन्दगी के संघर्ष में व्यस्त दिखाई देते थे। हर दिन प्रातः नागबल में पूजा करना, देवालय में देवमूर्ति के सम्मुख तिलक धारण करना तथा पुष्पार्चन कर घर लौटना, समय पर कोर्ट पहुँच कर तिलकधारी पण्डित द्वारा मुस्लिम असामी या जमात–ए–इस्लामी के केस की पैरवी करना, यह तो एक दृढ़संकल्पी आस्तिक विचारवान सहिष्णु व्यक्ति से ही सम्भव हो सकता है। यह हर एक के बस की बात नहीं है। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि नकारात्मक जीवन दृष्टि से उन्हें घृणा थी। वे सकारात्मक व्यवहार बुद्धि से काम लेकर जीवन जीने के पक्ष में थे।

भट्ट साहब प्रतिदिन सायं नागबल के विवेकानन्द केन्द्र में उपस्थित होकर जन समुदाय के साथ धर्म, संस्कृति, इतिहास, राजनीति एवं सामाजिक समस्याओं पर विचार–विमर्श करते थे और उपस्थित श्रोतःगण का मार्ग दर्शन भी करते थे। यह अनुशासित सभा प्रतिदिन एक घण्टे तक चलती थी।

यहीं पर युवा पीढ़ी के लिये हिन्दू यूथफोरम नामक 'संस्कार केन्द्र' में विचार गोष्ठियाँ आयोजित होती थीं। सब कार्यों के लिये मूल प्रेरणा स्रोत भट्ट साहब थे।

कहते हैं अनन्तनाग ज़िले के सभी बाशुऊर (शिष्ट) बुद्धिजीवी भट्ट साहब का सम्मान करते थे। वे एक सच्चे धर्म निष्ठ कश्मीरी गृहस्थ पण्डित थे, संकीर्ण हृदय वाले धर्मान्ध स्वार्थी आत्म प्रशंसक

नहीं। जिस प्रकार एक सालेह (परहेज़गार) मुसलमान सम्प्रदायवादी (तअस्सुफ़ी Communalist) नहीं हो सकता है उसी प्रकार से हिन्दू आस्था के पाबन्द प्रेमनाथ कटटर पंथी, हठ धर्मी (dogmatic) पण्डित नहीं थे। वे प्रत्येक शोषित और पीडित कश्मीरी के हिमायती थे चाहे वह हिन्दु होता था या मुसलमान। यही कारण है कि इलाके के सभी हिन्दू–मूसलमान प्रेमनाथ के साथ प्रेमभाव रखते थे और उन का सम्मान करते थे। सम्भवतः यह भी एक कारण था कि सन 1989 के विपदग्रस्त वातावरण में भी प्रेमनाथ को यह विश्वास था कि उस की कोई हत्या नहीं करसकता। शायद वस्तुस्थिति को पहचानने में उन्होंने देर कर दी। कभी–कभी आवश्यकता से अधिक आत्म विश्वास (Self confidence) भी घातक सिद्ध हो सकता है। मैं समझता हूँ कि यह जानते हुए भी कि वे अपनी रचनाओं के द्वारा आग उगल रहे हैं उन्हें बहुत पहले या तो निभृत स्थान (Hiding) में चला जाना चाहिये था या कश्मीर छोड़ कर सुरक्षित स्थान पर पहुँचना चाहिये था। लेकिन यह भी सत्य है कि दीवनों को अपनी जान की चिन्ता नहीं रहती। वे जीवन को जी लेते हैं दूसरों के लिये और जीवन खो देते हैं दूसरों के लिये।

**युवा शक्ति और प्रेम नाथ भट्ट**

भट्ट साहब को युवाशक्ति पर अटूट विश्वास था यही कारण है कि वे आजीवन युवाशक्ति के संगठन में लगे रहे। वे उन्हें जागरूक, निपुण और सक्रिय देखना चाहते थे। अपने कर्तव्यकर्म के प्रति वचनबद्ध युवा शक्ति को आगे बड़ते देख वे आश्वस्त हो उठते थे। युवा समाज को एकत्र करना, उन्हें अनुशासन का पाठ पढ़ाना, धर्म, संस्कृति और इतिहास की सम्यक् जानकारी प्रदान करना, संघर्ष के हेतु प्रेरित करना, राष्ट्र सम्मान की रक्षा के हेतु आत्माहुति के लिये तैयार रहना, शारीरिक विकास के साथ साथ मानसिक विकास की ओर ध्यान देना – इसी कार्य सूची (Agenda) के साथ भट्ट साहब युवाजन के साथ संघर्ष क्षेत्र में सक्रिय रहे।

किसी भी देश के इतिहास का गहन अध्ययन करने पर यह बात स्पष्ट हो जाती है कि क्रान्ति का शंखनाद फूँकने में युवाशक्ति की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। भट्ट साहब को विश्वास था कि जागरूक युवा शक्ति अंधड़ तूफ़ान सह कर समाज को छिन्न भिन्न होने से बचाती है। मानव शरीर के लिए नसों में प्रवाहित उष्ण रक्तधारा का जो महत्व है वही एक सामाजिक व्यवस्था को सुदृढ बनानें में युवा शक्ति का हैं। जिला अनन्तनाग और पुलवामा के असंख्य अल्प संख्यक नवयुवकों को उन्होंने साभिमान जीवन जीने की प्रेरणा दी । आतंकी का बन्दूकी जंग तो अमावस्या की गहन घटा का प्रकोप है जिस का वजूद परिपक्व मस्तिष्क की शुभ्रज्योत्सना से आज नहीं तो कल अवश्य मिट जायेगा। हर अन्धेरी रात के बाद नव आशा की र्स्वणरश्मियाँ उज्जवल प्रकाश बिखेरती जीने की उम्मीद जगाती है। यही भट्ट साहब का जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रहा हैं।

यदि पतझर की वायु थपेडो सें सावन की इति होगी धूलधूसरित होंगे फूल पतझर भी तो है अल्पकालीन याद रख इस बात को।

(जम्मू कश्मीर कल्चरल अकादमी प्रकाशन कुलियात महजूर – पृ० 186)

भट्ट साहब ने पद प्राप्ति के मोह में अपने सिद्धान्तों के साथ कभी समझोता नहीं किया। वे नौकर शाही के बाहुपाश में आनें के लिए तैयार नहीं थे। वक्त के हाकिमों ने बहुत ललचाया लेकिन उन्मुक्त आकाश में उडान भरने वाला पक्षी कभी भी स्वर्ण पिंजरे में पंख फडफडा कर जीवन जीनें के लिए तैयार नही हुआ। वे तो एक कर्मयोगी थे एक मिशनरी एक उदबोधक। कोई पद और पदवी पाकर जाति सेवक का स्वाँग भरता है तो काई भौतिक आकर्षणों से दूर हट कर लक्ष्य प्राप्ति हेतु अग्रसर होता है। प्रेमनाथ का चिन्तन परिपक्व और इरादा मुस्तहकम (अटल,दृढ)

था। वे ब्रह्मज्ञान प्राप्ति हेतु भी साधनारत थे और जन कल्याण हेतु भी प्रयत्नशील थे। उन की नज़रों में व्यक्ति प्रधान नहीं हैं समूह प्रधान है क्योंकि यह एक शोषित, उपेक्षित और अधिकार वंचित समुदाय के अस्तित्व का प्रश्न था। वे सनातन धर्म के पक्षधर थे। यह जोत उन के मानस में सुलग रही थी वे हज़ारों जाति बन्धुओं के मानस में इसें धधकती ज्वाला के रूप में देखना चाहते थे। डॉ० बी०एल०पण्डित के शब्दों में –'वे धर्मात्मा थे लेकिन धर्मान्ध नही। वे देश भक्त थे पर कट्टर पंथी नहीं। वे अहंकाररहित महामानव थे'।

'He was religious without being dogmatic, a patriot without being a bigot , an eminment without being proud'

'Pandit Prem Nath Bhat '- The man with a Mission compiled

by B.K Koul -A-6

स्वर्गीय अब्दुलअहद आज़ाद की निम्नलिखित काव्य पंक्तियाँ पण्डित प्रेम नाथ भट्ट के व्यक्तित्व पर खरी उतरती हैं:–

'सचाई की रस्सी खींच संगठन केहेतु, सचाई की शमशेर से –(जिन्दगी का) खेल खेलना

बलवीर धावा बोलकर पीछे नहीं मुडते उसके हृदय का आवेश प्रलय मचा देगा।

सिंह गर्जना से गीदड़ मेंड़ के नीचे छिप जाते हैं, सचाई की शमशेर से–खेल खेलना।

मोती शबनम (ओस) नहीं कि मात्र हिलने से टूटजाये, सचाई की शमशेर से–खेल खेलना।

("कुलयाति आज़ाद' – डॉ. पद्मनाथ गँजू पृ०372)

संसार में लाखों करोडों लोग जन्म लेते हैं अधिकांश मर कर लुप्त हो जाते हैं पर कुछ मर कर अमर हो जाते हैं। शहीद मरकर अमर हो जाता है क्योंकि वह यमराज को भी पछाड़ देता है। प्रेम नाथ धार्मिक उन्माद और कट्टर वादिता से कोसों दूर थे। उन्हें इस बात में दृढ़ विश्वास था कि धर्मान्धता (Fanaticism or Religious Frenzy) कश्मीर और कश्मीर वासियों के लिये हलाहल (ज़हरे कातिल) साबित होगा। ज़िला अनन्तनाग के जमाते–इस्लामी संगठन के साथ भट्ट साहब के अत्यन्त मधुर सम्बन्ध थे। इस्लाम धर्म और दर्शन का भट्ट साहब ने अध्ययन किया था और कभी कभी धर्म सम्मेलनों में वे धर्म और दर्शन पर अपने विचार व्यक्त करते हुए इस्लाम के महत् गुणों की चर्चा करते थे। वस्तुतः उन की विचार धारा और चिन्तन में दो तत्त्वों का विशेष महत्त्व था। मानव प्रेम एवं देश प्रेम। मानव प्रेम के सन्दर्भ में वे प्रायः धार्मिक संकीर्णताओं से ऊपर उठकर सर्वसुख और सर्वकल्याण की भावना से प्रेरित होकर 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुख भाग भवेत'। अमृत वचन पर बिश्वास करते थे। वे विश्व बन्धुत्व (Universal Brother hood) की भावना के साथ आत्मसात् करते दिखाई देते हैं। इय प्रकार जीवन संघर्ष में गिरते सँभलते, संघर्ष करते तथा संकल्पबद्ध जीवन जीते भट्ट साहब दक्षिण कश्मीर के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में अपनी रचनात्मक भूमिका निबाहते रहे।

सन् 1986 में दक्षिण कश्मीर साम्प्रदायिक तनाव के कारण क्षतिग्रस्त हुआ। लोकभवन (लारकी पोरा) – डूरू शाहबाद के निकट दनव बोगुण्ड (तहसील कुलगाम) तथा वनपोह (कृष्णराज़दान की जन्म एवं कर्मभूमि, तहसील अनन्तनाग) में अल्पसंख्यकों के धर्म स्थान अपवित्र और अपमानित किये गये। कई अन्य गाँव भी दक्षिण कश्मीर में इस आग से झुलस गये और कुल मिला कर चालीस से अधिक अल्पसंख्यकों के पूजा स्थल नष्ट भ्रष्ट हुए।

इतना ही नहीं अल्पसंख्यकों के निवास स्थान भी धर्मोन्मादियों के आक्रोश का शिकार हो गये, यह हमारे विस्थापन से पूर्व खतरे की पहली घंटी थी। देव मूर्तियाँ खंडित हुई और अपवित्र हो गये अमृत कुंड। भावी संकट की पूर्व सूचना देते हुए कश्मीर में बसन्त का आगमन हुआ। अल्पसंख्यक काँप उठे उन्हें यह मालूम नहीं था कि यह तो भीषण अदृश्य विनाश का हल्का आभास था। (Tip of Iceberg)

पण्डित साहब अपने समस्त सहयोगियों के साथ सक्रिय हो उठे। सभा गोष्ठियों में विचार होने लगा। सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों के सामने फ़रियाद की गई लेकिन बहरे–गूँगे सत्ताधारी सब कुछ जानते हुए भी अनजान बन गये। सरकारी कार्यवाही (कारवाई) आखिर शुरू हुई। केन्द्र सरकार आश्वासन देती रही। गान्धी जी ने कश्मीर में जिस किरण को देखा था उसकी तलाश पुनः शुरू हुई। तुष्टी करण की नीति अपना कर देश के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप की रक्षा करनी होगी, इसे पुष्ट करना होगा। जो कुछ हुआ उसे भूल जाना होगा। संसार में सब से सरल काम है दूसरे को उपदेश देना। दिवास्वप्न दिखा कर आम आदमी को भरमाया जा सकता है लेकिन प्रेमनाथ भट्ट जैसे जागरूक देशभक्त को नहीं। इसलिये वे षड़यंत्रकारियों की आँख की किरकिरी बन गये। यह स्वाभाविक था।

## निर्मम हत्या क्यों ?

मैं प्रेम नाथ भट्ट की नृशंस हत्या की पूर्वपीठिका प्रस्तुत करते हुए सत्ताधारियों की असावधानियों की ओर पाठक का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। अगर सन् 1986 के घटना चक्र को सत्ताधारियों ने गम्भीरता से लिया होता, देश की एकता और अखंडता का विचार किया होता, सैंकडों नवयुवकों का सीमा पार जाकर सैनिक प्रशिक्षण लेने की योजना की छानबीन की होती तो वह विनाशलीला हमें देखनी न पड़ती जिस की चपेट में आकर

आज पाँच लाख कश्मीरी अल्पसंख्यक पण्डित न घर के रहे और न घाट के।

पण्डित प्रेम नाथ भट्ट वस्तुस्थिति से परिचित थे। उन की प्रकाशित रचनाएँ एवं स्तम्भ–लेख प्रमाण स्वरूप अगले पृष्ठों पर चर्चा का विषय बन जायेंगे। वे षड़यंत्रकारियों की नज़र में थे। वे उस की कार्य योजना को ध्यान पूर्वक देख रहे थे। उन्हें विश्वास हो रहा था कि भविष्य में इस पण्डित नेता के द्वारा राष्ट्र विरोधी आन्दोलन में बाधा उपस्थित हो सकती है। वे उन की नित प्रकाशित हो रही रचनाओं को पढ़ रहे थे और उसकी मानसिकता से भली भाँति परिचित थे। अक्तूबर–नवम्बर 1989 ई० में गोपणीय कार्ययोजना के उपर से पर्दा धीरे धीरे उठ रहा था। अल्पसंख्यक समाज को डरा–धमका कर मातृभूमि छोड़ने के लिये विवश करना है। भयाक्रांत मानसिकता या मनोविकृति (Fear Psychosis) को उत्पन्न (create) करना होगा। कश्मीर को रक्त रंजित करना है, सब से सस्ता खून पण्डित का है। इसलिये मृत्यु दण्ड के नये नये तरीके आविष्कृत कर यमदूत की भूमिका में आंतकवाद के प्रशिक्षित नर–भक्षक छद्म वेशधारी उन्माद ग्रस्त कश्मीर युवक वन्य गिद्धों (Wild Vultures) के समान शान्ति प्रिय अल्पसंख्यक पर टूट पड़े और शारदापीठ रक्त स्नात हो उठा।

'सत्यम् एव जयते' का जय घोष करने वाला तिलकधारी पण्डित 27 दिसम्बर सन् 1989 ई० के दिन अनन्तनाग के सत्र न्यायालय (Session Court) में अपना एक केस पेश करने के बाद कई मूवक्किलों को मशविरा देकर तथा प्रदेश में घटित होने वाली घटनाओं के बारे में समाचार पत्रों से जानकारी प्राप्त कर दिन के पौने चार बजे घर लौट रहे थे कि खाह बाज़ार में बन्दूक धारी अथवा पिस्तोलधारी आतंकी युवक ने उन्हें गोलियों से छलनी कर दिया। देखते ही देखते अन्धेरा छा गया। कमांडर ने बहादुर आतंकी को शाबाशी दी और एक मस्त मौला चीखता चिल्लाता

तेज़ कदमों से भागता ज़ोर ज़ोर से कहने लगा कि 'अरे वज्रपात हुआ, वज्रपात'। लोग इधर–उधर भागने लगे। अनन्तनाग के भव्य मस्तक पर ग्रहण लग गया। इस्लामबाद रोने लगा लोग अपने अपने घरों की बन्द जालीदार खिड़कियों से बाहर झांक रहे थे। उन्हें लग रहा था कि जो कुछ हुआ अच्छा नहीं हुआ। दक्षिण कश्मीर के माथे पर कालिख पुत गई। इतिहास इस नृशंस कर्म के लिये कभी क्षमा नहीं करेगा। वास्तवमें कश्मीर घाटी के हर मुहल्ले में हिट लिस्ट तैयार किये गये थे जिन में पण्डित समुदाय के डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफ़ेसर, बेंक कर्मचारी, मीडिया कर्मी, दूरसंचार विभाग में कार्यरत तकनीकी कर्मचारी, सामाजिक नेता, धर्मगुरू अडवोकेट, खुफिया पुलिस कर्मचारी, व्यापारी आदि प्रमुख थे। इस सम्बन्ध में चर्चा अत्यंत गोपनीय रहती थी। अनन्तनाग के हिट लिस्ट में प्रेम नाथ भट्ट का नाम सब से ऊपर था। कमांडर ने सायम बहादुर आतंकी की प्रशंसा करते हुए हिटलिस्ट पर नाम के आगे टिक लगा दिया।

उस दिन एक एक होशमन्द कश्मीरी तड़प उठा। उस समय भी प्रेमनाथ के सुन्न (Stilled), निर्जीव, जडवत्) चेहरे पर मुसकान खिल रही थी मानो हम से कह रहे थे कि :–

"हम चले छोड़ के यारो अहलेवतन

जो हिम्मत है तो मेरी याद को छलनी कर दो।"

अनन्तनाग निवासी घाटी की चर्चित कश्मीरी कवयित्री श्रीमती गिरिजा कौल ने उन की शहादत पर अत्यंत मार्मिक शोकगीत लिखा है जो उन की पुस्तक 'गुरु दक्षिणा' में संगृहीत है। (लालस ऑस्य नेरनस लार)

रात भर मृतक शरीर घर में रखा गया क्योंकि सूर्यास्त के बाद संस्कार सम्भव नहीं था। आसपास के मुस्लिम पड़ौसी मातम पुरसी में शामिल नहीं हुए। केवल पण्डित एकत्र हुए। निश्चय हुआ

कि नागबल के पवित्र अस्थापन में अनन्त देव को साक्षी मानकर उस के लाडले पूत का अन्तिम संस्कार किया जाये और ऐसा ही हुआ। महान सन्त स्वामी गाश काक पहले दिव्य पुरुष हुए हैं जिन का दाहसंस्कार नागबल के देवस्थान पर हुआ। शहीद प्रेमनाथ भट्ट दूसरे महापुरुष थे जिन का अन्तिम संस्कार 28 दसिम्बर सन् 1989 ई० को नागबल के तीर्थ स्थान पर हुआ।

नेशनल कांफ्रेंस के तत्कालीन लोक सभा सदस्य स्वर्गीय श्री प्यारे लाल हण्डू ने कश्मीर की इस दिव्य विभूति को लोक सभा में श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि भट्ट साहब कश्मीर के सर्व श्रेष्ठ पुरुषों में एक थे (One of the finest man in Kashmir) शेष मुझ में लिखने का सामर्थ्य नहीं।

## प्रेम नाथ भट्ट वक्ता और लेखक

पण्डित प्रेम नथ भट्ट वक्ता और लेखक के रूप में भी ख्याति प्राप्त थे। उन्हें अंग्रेज़ी भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त था। देश के विभिन्न समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में उन की रचनाएँ प्रकाशित होती रही। वे ईमानदारी के साथ निर्भीक रूप में अपने विचार और चिन्तन पर आधृत मान्यताएँ प्रस्तुत कर विपक्षियों को खरी खरी सुनाते थे। मैं इन रचनााओं को ऐतिहासिक दस्तावेज़ मानता हूँ जो एक दिन शोध कर्ताओं द्वारा समकालीन कश्मीर इतिहास के झूठे सच को प्रकाश में लाने के हेतु विश्वसनीय सन्दर्भ सूत्रों के रूप में प्रयोग में लायें जायेंगे। रचनाओं को पढ़कर भट्ट साहब की ऐतिहासिक सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना के साथ–साथ उन की राजनीतिक चेतना का भी सम्यक् बोध होता है। उन में अद्‌भुत साहस था। निर्भीक रूप से परिणामों की चिन्ता किये बिना वे वस्तु–स्थिति और राजनीतिक घटनाचक्र पर अपना मतव्यक्त करते थे। यहाँ तक कहा जा सकता है कि वे एक स्वच्छन्द पत्रकार (Free Lance Journalist) थे। पेशे से वकील, आस्थावान

समाज सेवक तथा प्रबुद्ध जननायक जिस में तथ्योदधाटन की अद्‌भुत शक्ति थी।

यहाँ इस बात को स्पष्ट करना ज़रूरी होगा कि राजनीतिक दृष्टि से वे पर्याप्त जागरूक थे। राष्ट्रीय स्तर पर वे राजनीतिक गतिविधियों में रूचि लेते थे और राजनेताओं के सम्पर्क में थे। इस क्षेत्र से उन्होंने सन्यास नहीं लिया था विश्व स्तर पर घटित होने वाली घटनाओं के विषय में, राष्ट्र स्तर पर पनपते भाई भतीजा वाद पर और प्रादेशिक स्तर पर रंग बदलते राजनीतिक परिदृश्य पर उन की नज़र गहरी थी। मुझे ऐसा लगता है कि स्वतंत्र भारत में राजनीतिक दृष्टि से सर्वाधिक जागरूक कश्मीरी है। वह वर्षों अपने रेडियो सेट पर आकाशवाणी भी सुनता है, रेडियो पाकिस्तान भी और बी.बी. सी भी। मज़ाक के लिये आकाशवाणी, प्रतिक्रिया जानने के हेतु पाकिस्तान और आश्वस्त होने के लिये बी.बी.सी। चाहे वह पढ़ा लिखा है या अनपढ़ जहाँ उसे अवसर मिलेगा वह अपने दिल की बात कह ही देगा। अपनी प्रतिक्रिया जताने में उसे रूचि है। उस के पास कोई डिग्री है या नहीं इस की उसे कोई चिन्ता नहीं। बख्शी गुलाम मुहम्मद कितने पढ़े लिखे थे ? उन के मंत्री मंडल के एक सदस्य तो अंगूठा छाप थे। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि कश्मीरी राजनीतिक दृष्टि से अन्य प्रदेशों के लोगों की तुलना में अधिक जागरूक है। सन् 1965 के युद्ध में उस की भूमिका राष्ट्रहित के पक्ष में रही है और सन् 1989-90 के आतंकी छद्‌म युद्ध में उस की भूमिका विखंडन के समर्थन में रही है। समय के साथ साथ विचारधारा में बदलाव तो उस की सचेत मानसिकता का परिचायक है।

18 अगस्त 2008 ई० के दिन सईद अलीशाह गीलानी ने श्रीनगर में खुले आम यहाँ तक कहा कि 'हम पाकिस्तानी हैं पाकिस्तान हमारा है।' श्रीनगर कश्मीर के टूरिस्ट–रिस्यपशन सेन्टर के निकट आयोजित एक विशाल जनसभा में पाकिस्तानी

ध्वज लहराया गया। दूसरे दिन प्रदेश के दैनिक समाचार पत्रों में यह मुख्य समाचार था।

## स्तम्भ लेखक प्रेम नाथ भट्ट

भट्ट साहब की निर्मम हत्या के बाद जम्मू में विस्थापित समाज ने 'प्रेमनाथ भट्ट म्यमोरियल' ट्रस्ट की स्थापना की। स्वर्गीय प्रोफ़ेसर बलजिन्नाथ पण्डित इस ट्रस्ट के अध्यक्ष चुने गये और बड़े उत्साह के साथ ट्रस्ट की गतिविधियाँ जम्मू में चलती रहीं। ट्रस्ट ने भट्ट साहब द्वारा लिखित स्तम्भ लेखों और अन्य रचनाओं को पुस्तकाकार में प्रकाशित करने का निर्णाय लिया। कई वर्ष कार्यरत रह कर जनवरी सन् 1996 ई० में 175 पृष्ठों की पुस्तक 'The Truth Fore told' (पूर्वकथित सत्य) का प्रथम संस्करण अंग्रेज़ी भाषा में 'हाईटेक आफ सेट (प) लिमिटेड' मद्रास–14 से प्रकाशित हुआ। पुस्तक तीन खण्डों में विभाजित है। प्रथम खण्ड का उपशीर्षक है –'दिसम्बर सन् 1989 ई० पूर्व कश्मीर परिदृश्य' और इस के अतंर्गत 11 लेख संगृहीत हैं जिन में कुछ उल्लेखनीय लेख इस प्रकार हैं –

1.1 'The insurgency in Kashmir masterminded from saudi Arabia and Pakistan' Organiser' 16-6-1985

1.2 'Anti India elements in Kashmir' Organiser' 9-3-1986

1.6 'Attacks on Minority Shrines' 'Martand' 17-3-1989

1.7 'Kashmir, the next Mujahideen target after Afghanistan' Organiser' 10-7-1989.

1.10 'Gunning down of Taploo - Why ? Jammu Panorame Sep. 1989

1.11 'Shall India lose Kashmir'.

---

द्वितीय खण्ड में 'कश्मीरी हिन्दू की दुर्दशा तथा उनके संघर्षात्मक मामले' उपशीर्षक के अंतर्गत 16 लेख

संगृहीत हैं जिनमें कुछ उल्लेखनीय रचनाएँ इस प्रकार हैं –

2.5 'Trauma of Kashmiri Pandits' 'Martand' June 1986

2.6 'Secular India and our Minorities' 'Martand' October 1986

2.10 'Kashmiri Pandit before and after Independence' 'Daily Excelsior' 11-11-1988

2.11 'Kashmiri Pandits and martyrdom of 'Daily Excelsior' 19-12-1988

Guru Teg Bahadur

2.13 'Kashmiri minority in gas chambers 'Martand' May 1989

2.14 'Conmunal Conspiracy in Kashmir' 'Jammu Panorame' May 1989

तृतीय खण्ड में 'राजनीतिक तथा सामाजिक विचार' शीर्षक के अंतर्गत 10 लेख संगृहीत हैं जिन में कुछ

महत्त्वपूर्ण रचनाएँ इस प्रकार हैं –

3.1 'Kashmiri' Muslims at cross roads_______________

3.4 'Soft State called India' Daily Excelsior 15-11-1988

3.7 'The minority commission' Martand 24-2-1984

3.8 'A Human Rights issue in Jammu & Kashmir' Daily Excelsior 28-6-1987

3.10 'Jagmohan era in Kashmir' Samachar Post 19-7-1987

इस प्रकार 'The Truth Foretold' पुस्तक में तीन उपशीर्षकों के अंतर्गत (11+16+10) 37 स्तम्भ लेख तथा अन्य रचनाएँ संगृहीत है जिन में अधिकांश विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। कश्मीर में विद्रोह बगावत (Insurgency rebillion), अल्पसंख्यकों के धर्मस्थलों पर आक्रमण, पाकिस्तान में कश्मीर सेंल,पाकिस्तान द्वारा

कश्मीर में ध्वंसन (Sabotage), विनाश (Subversion) तथा जासूसी (espionage), कश्मीर में भारत विरोंधी तत्व, कश्मीरी पण्डितों का सदमा (मानसिक आघात), गुरु तेग बहादुर की शहादत और कश्मीरी पण्डित, कश्मीर में साम्प्रधायिक षड्यंत्र, स्वतंत्रता पूर्व एवं स्वातंत्र्योत्तर काल में कश्मीरी पण्डित, धर्मनिरपेक्ष भारत और हमारें अल्पसंख्यक, आयोग, कश्मीर में जगमोहन युग,'धर्म निरपेक्ष प्रयोगशाला के गैसचेम्बर में कश्मीर के अल्पसंख्यक' आदि निबन्धों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करनें के बाद जम्मू –कश्मीर राज्य की वास्तविक स्थिति (ground realities) का बोध होता है तथा साथ ही भट्ट साहब की चिन्तन प्रक्रिया को जानने समझने में सहयाता मिलती है। इस दृष्टि से निम्न लिखित विचार बिन्दु विचारणा के योग्य है–

1) भट्ट साहब युग– सत्य के प्रति सचेत भी थे और सावधान भी।

2) भट्ट साहब समकालीन कश्मीर राजनीति के हरमोड़ से परिचित थे।

3) भट्ट साहब कश्मीरी मुस्लिम की मानसिकता (Psyche) से वाकिफ़ थे जिसे केन्द्र के सत्ताधारी आज तक समझ नहीं सकें अथवा समझ कर भी अनभिज्ञ (unaware) होने का स्वाँग रचते हैं। भट्ट साहब वोट की राजनीति के प्रति भी सतर्क थे और क मरी पण्डित का वोट बैंक न होने के कारण दुर्दशा ग्रस्त जीवन जीनें की विवशता से भी दोचार थे।

5 अफगानिस्तान से रूसीसत्ता को खदेंडने के लिए बड़े भाई ने आतंकवाद को दूध पिला पिला कर पाला पोसा, बडा किया, समर्थ बनाया और आज कश्मीरी भाषा की इस कहावत में ध्वनित व्यंग्यार्थ की चोट से छाती पीट पीट कर चिला रहा है–

'जिसको मैं ने पालपोसकर बड़ा किया अे खुदा !उसी से मेरी रक्षा करना।'

6 भट्ट साहब अपने जाति बन्धुओं के शोषित, पीडित अपमानित उपेक्षित और पलायन के हेतु विवश जीवन को बहुत निकट से देख रहे थे, आक्रोश की चिन्गारियाँ उनके मानस में सुलग रही थी। इस के लिए कश्मीरी पण्डित स्वयं कितना दोषी है वे इस समुदाय के गुणदोषों से भलि भाँति परिचित थे। लेकिन यह समय दोषारोपण का न था। मूल उखड रहे थे और शाखाओं को सीचना बद्धिमानी नही है अतः संगठित होकर अपने अस्तित्व की रक्षा के हेतु लड़ना होगा। दुर्भाग्य वश हम हर समय टुकड़ों में बट गये। आज स्थिति भयावह है। कश्मीरी पण्डित की सत्ता डाइल्यूट (तनु) हो रही है। इस तनुकरण (solution) का परिणाम हम आँखों से देख रहे है। हमारी मातृभाषा हम से छिन रही है, हमारे संस्कार हम से रूठ कर अलग हो रहे है। हमें अपने लोक उत्सवों की कोई जानकारी नहीं है। मैंने दस कश्मीरी पण्डितों से सविनय यह जानना चाहा कि स्वामी अमर नाथ महाराज की यात्र में चन्दनवारी, शेषनाग और विशेष कर पंचतरणी की क्या धार्मिक महत्ता है, कोइ मुझे समझा न सका। यह कितने दुख की बात है।

राजनीतिक स्तर पर स्वातंत्र्योत्तर युग में कश्मीरी पण्डित आज कहाँ खडा है ? भट्ट साहब के शब्दों में देश की धर्मनिरपेक्ष प्रयोगशाला में वह घुट घुट कर मर रहा है।

7 कश्मीर घाटी के राजनितिक मंच पर 'नेश्नल कांफ्रेंस' के साथ साथ 'जमात–ए–इस्लामी', 'महाज़रायशुमारी' (Plebiscite front) अर्धमृत अवस्था मे नेश्नल कांग्रेस, जन संघ (भारतीय जनता पार्टी) और वामदल सक्रिय रहे है। दक्षिण कश्मीर में कहीं कहीं युवाजन लाल सलाम भी बजाते रहे। मुझे यह कहना है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 'व्यक्ति प्रधान राजनितिक दल' सत्ता पर हावी हो गये। पण्डित का कहीं वजूद ही नहीं था। वह हर शासन तंत्र में उपेक्षित और तिरस्कृत रहा। चन्द क मीरी पण्डित नेता जी हजूरी में अपनी दक्षता दिखाते हुए सत्ता के गलियारों तक पहुचे जरूर

लेकिन जाति बहुत पीछे पिछड़ गयी। स्वर्गीय भट्ट साहब इसी पिछडी हुई जाति में नवप्राणों का संचार करना चाहते थे।

vii कश्मीरी पण्डित सदा शान्तिप्रिय रहा है। इस अल्पसंख्यक जन समाज में शून्य प्रतिशत अपराध दर (zero percent crime rate) है। इस बात को सभी मानतें है। यह एक पढ़ा लिखा समाज है और संकट काल में ।गँ स्रस्वती ने ही बार बार इन की रक्षा की है लेकिन स्वतंत्र्ता प्रा‍ि के बाद वोट बैंक न होने के कारण अन्य सम्प्रदायों की तुऌना में ये बहुत पीछे रह गये और आज स्थिति यह है कि ये भारत के वि ााल सांस्कृतिक प्रवाह में बह कर धीरें धीरे लुप्त हो रहा है। इतिहास गवाह है कि इन्हें कई बार विस्थापन की यातना सहनी पड़ी है और अब की बार विस्थापन ने इन्हें जड़ से उखाड़ कर दूर फेंक दिया। आज किसी श्री भट्ट को तला ाना होगा जो क मीर के असल सत्ताधारियों का वि वास जीतकर जाति का उद्धार कर सके।प्रेम नाथ भट्ट को कांग्रेस की सत्तालोलुप नीतियों पर कोई विश्वास नही।'Congress-I out to sacrifice Kashmir for Muslim votes(108) रचना को पढ़कर भट्ट साहब जैसे जागरूक स्तम्भ लेखक (columnist) के अद्‌भुत साहस का अनुमान लगााया जा सकता है। निबन्ध का समाहार करते हुए भट्ट साहब लिखते है–

'The congress Party is preoccupied with appeasing Pakistan and Pro-Pak Muslim organisations with in India to cover Muslim vote. The security and stability of the country is in danger. Kashmir is emitting alarms.who will heed?'
(भट्ट साहब का यह लेख सितम्बर 1989 इ० मे प्रकाशित हुआ है।)

(ix) भट्ट साहब ने समकालीन राजनीतिक घटना चक्र से अलग हट कर सांस्कृतिक और सामाजिक विषयों पर भी रचनाएँ लिखी है। जो इस पुस्तक में संगृहीत नही है। आव यकता इस बात की है कि उन रचनाओं का सम्पादित रूप भी प्रकाश में लाया जाये

ताकि प्रेमनाथ भट्ट के बहुआयामी व्यक्तित्व का एक परिपूर्ण रेखाचित्र हमारी आखों के सामने आजाये। भट्ट साहब का परिवार पैसे का महुताज नहीं।स्वयं वे गुप्त दानी थे। अबलाओं से लेकर विधवावों तक और बच्चों से लेकर बूढ़ों तक वे सहायता रूप में धनराशि पहुचाते रहे। मैं अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर कहना चाहता हूँ कि उनके गुणवान एवं कर्मवान सुपुत्र श्री कश्मीरी लाल भट्ट भी अपने स्वर्गीय पिता के पद चिहनों पर चल रहे हैं। अतः यह काम सुविधा के साथ पूरा किया जा सकता है। मैं उन अप्रकाशित रचनाओं को सांस्कृतिक सम्पदा के रूप में महत्वपूर्ण समझता हूँ।

(x) 'स्वतंत्र भारत में अल्पसंख्यक' तथा 'कश्मीर में अल्पसंख्यक–दोनों में बहुत अन्तर है। वहाँ मुस्लमान अल्पसंख्यक है और यहाँ हिन्दू। हिन्दू–जो वोट बैंक नहीं है। हिन्दू–जो आज्ञाकारी राजकर्मचारी बन कर जीने में वि वास रखता है। हिन्दू –जो टुकडों में बटा है। हिन्दू–जिसका सामाजिक ताना बाना तार तार हो चुका है। हिन्दू–जिसकी जिह्वा 'जी सरकार', 'जी हजूर' तथा 'यस्सर' कहते कहते गल चुकी है। हिन्दू –जिसपर माँ सरस्वती की वरदहस्त कृपा है। हिन्दू–जो जी रहा है इसलिये कि उसमें मिटने की तमन्ना है। हिन्दु–जिसका आजतक सुयोग्य नेतृत्व नहीं मिला है।

भट्ट साहब को इस अल्पसंख्यक हिन्दू के प्रति अपार सहानुभूति है। वे इसकी दशा सुधारने के हेतु आजीवन प्रयत्नशील रहे। 'Kashmiri Pandit', at the cross road (2.3) 'Pandits want Peace(2.4),' 'Trauma of Kashmir Pandits (2.5),' 'Kashmiri Pandit before and after independence'(2.10)

आदि रचनाए पढ़कर भट्ट साहब के परिपक्व चिन्तन, निर्भीक अभिव्यक्ति एवं दृढ़ आस्था का अनुमान पाठक लगा सकते है।

(xi) पुस्तक के द्वितीय खण्ड का अंतिम निबन्ध  नदपजम वत

चमतपी (2.16) एक अत्यंत आर्कषक आहवान प्रधान लघु शब्द चित्र है। भट्ट साहब भैतिक उन्नति की अपेक्षा आध्यात्मिक उन्नति को प्राथमिकता देते हुए सांस्कृतिक पुनरजागरण के हेतु 'साधना केंन्द्र' की स्थापना को परमाव यक मानते है। उन्हें वि वास है कि केवल स्वधर्मबोध ही हमें वर्तमान संकट से उभार सकता है। वे इस तथ्य से भी भलीभाँति परिचित हैं कि श्रीमद् भगवद् गीता में तो स्पष्ट रूप से धर्माचरण का आदेश इस प्रकार दिया गया है—

'श्रेयान्स्वधमं, विगुणः पर धर्मात्स्वनुष्ठितात् ।

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः 11'3/35

भट्ट साहब सांस्कृतिक बोध को नितान्ताव यक मानते है। क्योंकि यही हमारी वास्तविक पहचान है। श्रीराम एवं श्रीकृ ण तो भारत रा ट्र के जन नायक हैं जिन्होने धर्म की स्थापना के हेतु , सत्य की प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए तथा अधर्म के विनाश के हेतु सामूहिक संघर्ष को प्राथमिकता दी है। भट्ट साहब प्रतिदिन दक घण्टा साधना केन्द्र में साधनारत रह कर स्वर्णिम अतीत के सहस्त्रें वर्ष पुराने सांस्कृतिक इतिहास को जानने की प्रेरणा देते हैं। संस्कारवान बनने के लिए यह नितान्तावश्यक हैं। आत्मानु ासन का पाठपढ़ा कर जाति उद्धारक हमें परस्पर बन्धुत्व की डोर में बान्धकर गहनतम अन्धकार से उज्जवल प्रकाश की ओर बढ़ने की पेरणा देते हैं।

यह केवल दो पृष्ठों पर लिखित एक अत्यन्त संक्षिप्तरचना है लेकिन मेरे विचार से प्रभाव की दृष्टि से सब से श्रेष्ठ रचना है। भट्ट साहब लिखते है—

'The west is mad after Rama and Krishna, but we know very little about our national heroes.........

We must know our self, our Dharma our identity and our Nation. It is after knowing that we can make concerted effort to

build our character our society and our nation. This one hour's Sadhana and study can transform our individual life and make our Nation strong.

XII) द्वितीय खण्ड के अंतर्गत भट्ट साहब की एक महत्त्वपूर्ण रचना 'Right to live' (2.1) (जीने का अधिकार) शीर्षक से संकलित है। यह लेख सन् 1980 ई० में 'मार्तण्ड' के मई–जून अंक में प्रकाशित हुआ है। लेखक ने इतिहास के यथार्थ को निर्भीकता के साथ उस के सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। अल्पसंख्यक समुदाय के मूलभूत अधिकारों का हनन होने लगा। भट्ट साहब 'पण्डित त्रिलोकी नाथ एवं श्री मक्खन लाल वाज़ा तथा अन्य' राज्य शिक्षा विभाग के कश्मीरी पण्डित कर्मचारियों (शिक्षकों) की उस ऐतिहासिक समादेश याचिका (writ Petiton) की चर्चा करते हैं जिसे राज्य के हाई कोर्ट से लेकर भारत के उच्चतम न्यायालय में पेश किया गया। समय पर सुनवाई हुई और राज्य सरकार को संविधान विरुद्ध तथा न्याय विरुद्ध कुकर्म करने पर लज्जित होना पड़ा। दूसरा उदाहरण एक धर्म स्थल (गाँव सॉली, तहसील अनन्तनाग – पापहरण तीर्थ) के भूमि विवाद से जुड़ा है जहाँ देवस्थल की भूमि पर ज़बरदस्ती अन्य धर्मावलम्बी अपने उपासना केन्द्र का निर्माण करने लगे।विधि विशेषज्ञ के रूप में भट्ट साहब ने ज़िला अनन्ताग के कई देवस्थलों की चर्चा करते हुए यह बताने का प्रयास किया है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हम जिस बात की कल्पना तक नही कर सकते थे वही यथार्थ रूप में हमें देखना और भुगतना पड़ रहा है। वे सत्तधारियों से पूछते है–

'Are we then scape goats at the altar of the so called secularism'. –पृ० 51&

और सचाई का परदाफा I करते हुए लिखते है–

'Now Budhists from Tibet ,sweet meat sellers, umbrella repairers, goldsmiths, religious preachers and the like from UP.

Bihar and Bengal are encouraged to settle down here and in many cases even given the prized state subject certificate,'(Page -54)

इस अल्पसंख्यक समाज ने सन् 1989-90 में जो कुछ देखा अथवा जो कुछ इस समाज को सहना पडा इसका पूर्वाभास पूर्वबोध (Premonition) हमें स्वर्गीय भट्ट साहब की रचनाओं में यत्र–तत्र देखने को मिलता है। उन्होंने यहाँ तक स्पष्ट कह दिया था कि –

'Kashmir has been and continues to be in the mind of international conspiraters who would very much love to see Kashmiri Pandit out of the state'.

'The Trium virate of KashmirI Pandits' -Page -120 (यह रचना जनवरी सन् 1984 में मार्मण्ड मे प्रकाशित हो चुकी है।)

इस शान्तिप्रिय जनसमुदाय ने सदा अनयाय और अत्याचार के दबाव में रहकर अपार सहन ाीलता का परिचय देते हुए कहीं वस्तुस्थिति के साथ समझौता किया और कहीं विवश होकर राज्य की सीमाओं के बाहर अपने भवि य को तला ानें का प्रयास किया। भट्ट साहब के शब्दों में यह समाज अग्निपरिक्षा से गुज़र रहा है और इस के संकटों का अन्त कहीं दिखाई नहीं देता–

"It is our community which has seen the savagery of alien rule and worst religious persecution.......... this 'Agni Pariksha' seems to have no end' Page-51-

## भट्ट साहब की हत्या क्यों हुई ?

प्रेम नाथ भट्ट की हत्या क्यों हुई। मैं इसी 'क्यो' का उत्तर देने का प्रयास कर रहा हूँ। पाठक प्रेमनाथ भट्ट की लेखनी से ही अपनी शंका का समाधान ढूँढ सकते हैं।

(xiii) 'Kashmiri Pandits and martyrdom of Guru Teg Bhadur' एक ऐतिहासिक निबन्ध है जिस में गुरू तेग बहादुर के आत्म बलिदान

और नृशंस मुगलशासक औरंगज़ेब की दानवलीला को समानान्तर रूप से प्रस्तुत करते हुए बर्बर शासक के क्रूर अत्याचार पर कसकर चोट की गई हैं। 25 मई सन् 1675 ई० के दिन चुपचाप मट्टन निवासी पण्डित कृपाराम के नेतृत्व में 16 व्यक्तियों का एक जत्था आनन्दपुर साहब (चक नानकी) में गुरु तेग बहादुर से मिला और अपनी व्यथा कथा सह सुनाई । उनका केवल एक दोष था कि ओंरंगज़ेब की धर्मान्धता के सम्मुख शीश झुकाते उन्होंने ध र्मान्तरण को नहीं स्वीकारा। गुरू तेग बहादुर पण्डितों की दुर्दशा देखकर पसीज उठे। 11जुलाई 1675 ई० के दिन वे बाद शाह से मिलने दिल्ली की ओर निकल पड़ें। दूसरे ही दिन उन्हें बन्धक बनाया गया और औरंगज़ेब के आदेश को ठुकराने पर 11 नवम्बर 1675 ई० के दिन उन्होने पण्डितों के मान सम्मान की रक्षा के हेतु चान्दनी चौक दिल्ली में अपने प्राणों की आहुति दी। उन के गले में बन्धें कागज़के एक टुकडे पर लिखा था–'मैं ने शीश दिया पर अपना धर्म विश्वास नहीं'। इस प्रकार सिक्ख गुरू ने शीर्ष दान देकर पडित समाज को जीनें की प्रेरणा दी। व्यक्ति ने आहुति चढ़ाई समष्टि के हेतु।

भट्ट साहब सोद्देश्य तीन सौ तैंतीस वर्ष पुरानी शहीदी कथा की स्मृति दिलाकर हताश जन समुदाय में नव प्राणों का संचार करते हुए निजी धार्मिक विश्वास के साथ जीनें की ललक जगा रहे है। सन् 1986 ई० में दक्षिण कश्मीर में जो कुछ हुआ था उस ने आस्थावान लोक मानस को हिलाकर रख दिया। विस्थापन के बाद 16 अप्रैल सन् 1995 ई० के दिन 1200 कश्मीरी पण्डितों का एक जत्था डॉ० अग्नि शेखर के नेतृत्व में आनन्दपुर साहब गुरु के दरबार में अपनी व्यथा कथा सुनाने के लिये पहुँचा। अरदास के बाद शिला लेख की स्थापना की। सिक्ख संगत ने हौसला बढ़ाया और बड़ें से बडा बलिदान देकर जीने की प्रेरणा दी। प्रेम नाथ जी के शब्दों में –

'India can not forget till eternity, the supreme sacrifice of our revered sikh Gurus for protection of Dharma..........Let the lives of these Great Gurus inspire our nation to sacrifice.........for the greatness and glory of our mother country which has given birth to these symbols of sacrifices.

(प्रस्तुत लेख 19 दिसम्बर 1988 ई० के दिन दैनिक अंग्रेज़ी समाचार पत्र 'The Daily Excelsior' में प्रकाशित हुआ है।)

(XIV) 'Shall India lose Kashmir' (1.11) यह स्तम्भ लेख 25 दिसम्बर 1989 ई० और 27 दिसम्बर 1989 ई० के मध्य लिखा गया होगा क्योंकि 27 दिसम्बर 1989 ई० के दिन प्रेम नाथ ने शहादत का जाम पिया।

इस रचना से मैं बेहद प्रभावित हुआ। प्रेमनाथ की भविष्यवाणी यथार्थ के बहुत निकट है। आज कश्मीर में भारत विरोधी तत्त्वों का जनमानस पर पूर्ण नियंत्रण है। शंकराचार्य की पहाड़ी 'सुलेमान टेंग' हो गई और हारी पर्बत की टेकरी 'कोहे मारान' क्या अभी भी कुछ शेष बचा है। सम्पूर्ण जन मानस भारत विरोधी तत्त्वों के समर्थन में जुटा है और आये दिन हमारे सैनिक मौत के मुहँ में जाकर तिरंगे की शान में अपनी जानगँवा देते हैं। जनरल ज़िया का 'Operation Topac' पहले मरहले से गुज़र कर दूसरे मरहले से बड़े वेग के साथ आगे बढ़ रहा है और हम दीवार पर लिखी इबारत (तहरीर, लेख) को या तो पढ़ने से इंकार करते हैं या पढ़कर भी आपनी असहायावस्था के कारण चुप हो जाते हैं। सत्ता लोलुप राजनेता 'कुर्सी बचाओ' की नीति अपनाकर एक दूसरे को नंगा करने में लगे हैं। उन्हें चाहिये – आगे पीछे बन्दूक धारियों से लेस मोटर गाडियाँ, वाहवाही और ज़िन्दाबाद। कई विदेशी षड़यंत्रकारी देश में सक्रिय हैं और आये दिन भारत की धरती अपनी ही संतति के रक्त से लाल हो रही है। पहले तो धर्म के नाम पर बटे थे आज प्रदेश के नाम पर, शहर के नाम पर, क्षेत्र के नाम पर, व्यवसाय के नाम पर यहाँ पर कि संतों के नाम पर भी बट चुके हैं। देश

पुनः विभाजन के कगार पर पहुँच चुका है। समस्याएँ हमारी आस्था और मान्यताओं के साथ जुड़ी हैं। अचानक कहाँ क्या हो रहा है – कुछ समझ में नहीं आ रहा है। हर नेता का पुत्र अथवा पुत्री जन्मजात नेता अथवा नेत्री सिद्ध हो रही हैं और यह सिलसिला 21वीं शताब्दी में शख्सी राज (अधिनायकत्व) का संशोधित (modified) रूप दिखाई दे रहा है। जम्मू कश्मीर राज्य में एक नहीं अनेक राष्ट्र विरुद्ध शक्तियाँ क्रियारत हैं। बन्दूक गाजर मूली की तरह अल्पवयस्क युवकों के हाथ में आ गये हैं। आगे क्या होगा कुछ समझ में नहीं आ रहा है। भट्ट साहब स्पष्ट शब्दों में लिखते हैं कि कश्मीर में शासनतंत्र (Administration) आतंकियों के साथ है और समस्त गुप्त सूचनायें राज्याधिकारियों के द्वारा आतंकियों तक पहुँचायी जा रही है। लिखते हैं –

'The intelligence reports suggest that almost all the big bosses Viz. District Magistrate and other Police officers have been giving advance information to the parents of Terrorists about the Government's next day plan.' -Page -46
(यह लेख भट्ट साहब ने शहीद होने से दो दिन पूर्व लिखा है।)

भट्ट साहब दिसम्बर 1989 ई० के घटना चक्र को ध्यान में रखकर इस प्रकार आश्चर्य चकित कर देने वाले तथ्यों को बेनकाब कर रहे हैं। न केवल कश्मीर अपितु जम्मू संभाग (Division) के किश्तवाड़, डोड़ा, राजोरी, पुंछ, बनिहाल, गूल गुलाबगढ़ इलाकों में भी राष्ट्र विरोधी आतंकी गतिविधियाँ एक पूर्व निश्चित योजना के अंतर्गत चलायी जा रही हैं।

XV) पड़ोसी देश में सैंकड़ों प्रशिक्षण केन्द्रों में हज़ारों कश्मीरी प्रशिक्षित हुए हैं और आज भी हो रहे हैं। एक अरब बीस करोड़ जनसंख्या वाले भारत देश के सत्ताधारियों के पास न इच्छा है, न संकल्प और न शक्ति, ज़रा याद कीजिये सन् 1971 ई० को जब हम ने इन्हें लाखों की संख्या में बन्धक बनाया था। कहा जाता है कि भारत अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित नियमों और आदेशों के

कारण वचनबद्ध है। चीन ने इस पाबन्दी की धज्जियाँ उड़ा दी, सही यह है कि '

'क्षमा शोभती उस भुजंग को

जिस के पस गरल हो

उस को क्या, ो दंतहीन,

विषरहित, विनीत, सरल हो ?'

'कुरू क्षेत्र' – डॉ० रामधारी सिंह 'दिनकर;'

तृतीय सर्ग – पृ० 36 – प्रकाशन वर्ष – 1946 ई०

इसी लिये मृत्यु पूर्व दिसम्बर सन् 1989 में अपना आक्रोशव्यक्त करते हुए भट्ट साहब ने लिखा है –

'It is not in Mufti's Kit or V.P. Singh's hit, to solve the problem. It requires indomitable strength and Patriotic Passion to deal with this menance. "Shall India lose Kashmir' Page - 48

भट्ट साहब स्पष्ट शब्दों में इस बात की ओर संकेत करते हैं कि 18 दिसम्बर 1989 ई० के दिन पाँच आतंकियों की रिहाई बहुत बड़ी भूल थी – हिमालयायी भूल। बिल्कुल वैसी ही भूल जैसी एन. डी.ए सरकार ने उस समय की जब तीन आतंकियों को जहाज़ में बिठा कर देश के विदेश मंत्री, भारतीय सेना के पूर्व संतरी, कन्धार पहुँच गये। आज स्थिति यह है कि घाटी में पाकिस्तानी झण्डा लहराया जाता है, न केवल घाटी में अपितु घाटी में बाहर भी। अतः बहुत खिन्न मन से अपना अन्तिम निष्कर्ष देते हुए भट्ट साहब लिखते हैं –'With this state of affairs, it is not difficult for Pakistan to delink kashmir from India ? Page - 48

XVI) अब मैं भट्ट साहब के इन निबन्धों की एक ओर विशेषता की आरे पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। आकार की

दृष्टि से ये निबन्ध अत्यंत संक्षिप्त, तथ्याधृत एवं स्वानुभूति मूलक हैं। भट्ट साहब विषय के साथ किसी न किसी रूप में जुड़े हैं और उनका स्वानुभूत यथार्थ शब्द बद्ध हो कर साकार रूप धारण करता है। ये रचनाएँ साहित्यिक निबन्ध नहीं हैं और न भट्ट साहब ने इन्हें किसी पुस्तक में प्रकाशित करने के हेतु लिखा है। वे वस्तुतः अपने आप को जनमानस के साथ जोड़ कर अनुभूति के स्तर पर तादात्म्य स्थापित करना चाहते थे और इस में उन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। अभिव्यक्ति का माध्यम विदेशी भाषा है। मेरे विचार से यह जरूरी था क्योंकि भट्ट साहब सम्पूर्ण राष्ट्र के साथ अपना सम्बन्ध स्थापित करना चाहते थे। इतना ही नहीं विदेशों में जन सामान्य को यह ज्ञात ही न था कि कश्मीर में पाँच–सात लाख ऐसे लोग भी हैं जो यहाँ के मूल निवासी है और हज़ारों वर्षों से कश्मीर घाटी में रहते चले आ रहे हैं। इस्लाम तो बहुत बाद में आया। इन मूल निवासियों की ट्रेजिड़ी यह है कि आज इन्हें देश छोड़ कर चले जाने के लिये विवश किया गया। 14 अप्रैल 1990 ई० के दिन कश्मीर से प्रकाशित होने वाले दैनिक उर्दू समाचार पत्र 'अलसफ़ा' के मुख पृष्ठ को देखिये। यह तो एक ऐतिहासिक साक्ष्य है। अतः विदेशों में रहने वाले बुद्धिजीवियों एवं प्रबुद्ध जनों तक अपनी बात पहुँचाने केलिये अंग्रेज़ी भाषा में लिखना ज़रूरी था। लेकिन यह भी ज़रूरी है कि आम भारतवासी के लिये इस पुस्तिका का राष्ट्रभाषा हिन्दी में अनूदित रूप तैयार किया जाता। मैं समझता हूँ कि अंग्रेजी रूप से कहीं अधिक कारगर (प्रभावकर) हिन्दी रूप सिद्ध होता।

## भाषा व्यवहार

यहाँ भट्ट साहब अंग्रेज़ी भाषा का व्यवहार आमजनता के लिये करते हैं। साहित्यिक भाषा, जनभाषा और समाचार पत्रों (Print Media) की भाषा तीनों में बड़ा अन्तर रहता है। भट्ट साहब ने सरल व्यावहारिक जन सुलभ भाषा का प्रयोग किया है। यहाँ तक

कि कहीं कहीं देशी शब्दों को ही रोमन लिपि में लिखकर व्यवहार में लाया है। मूल शब्द में अर्थ अभिव्यक्ति की जो शक्ति रहती है वह उसके अनुवाद में देखने को नहीं मिलती। कुछ उदाहरण इस प्रकार से हैं –

| | | | |
|---|---|---|---|
| Samskaras | (Page -125) | Mantras | (Page 07) |
| Mujahideen | (Page 47) | Door Darshan | (Page 36) |
| Hindu Darma | (Page 99) | Hartal | (Page 25) |
| Mohalla | (Page 44) | Agni Pareksha | (Page 51) |
| Dharma Shala | (Page 29) | Sadhana | (Page 124) |
| Sammelan | (Page 81) | Asthapan | (Page 93) |

भट्ट साहब का उद्देश्य था जनमानस तक पहुँचना अतः जनसुलभ शब्दावली को अपनाकर वे भीतरी आक्रोश एवं मनः स्थिति को बाह्याभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। पुस्तक में कई भाषा प्रयोग बेहद आकर्षक एवं मौलिक हैं। मैं कुछ उदाहरण पेश कर बात को समाप्त करना चाहता हूँ। भट्ट साहब लिखते हैं –

1. 'The Simla accord was a big victory for the champion of one thousand years war with India. Page 38
2. 'It is not in Mufti's Kit or V.P. Singh's hit to solve the Problem'. Page - 48
3. 'It is clear beyond all doubts that the Hindus and Muslims do and can live happily and peacefully together' Page 61.
4. 'Another betrayal by the congress was the ceasefire in Kasmir. Page - 142
5. 'The Order of ceasefire in Kashmir in 1948 was the first major disagreement between General cariappa and Nehru". Page - 142

viii) जम्मू पनोरमा' के सितम्बर सन् 1989 अंक में भट्ट साहब

की एक महत्त्वपूर्ण रचना 'Gunning down of Taploo - Why' ? शीर्षक से प्रकाशित हुई। रचना को मैं स्तम्भ लेख' ही कहूँगा। आकार में अत्यन्त संक्षिप्त लेकिन 'हकीकत बयानी' में अत्यंत समर्थ और सशक्त। 14 सितंम्बर 1989 ई० के दिन एडवोकेट पण्डित टीका लाल टॅपलू, उपप्रधान भारतीय जनता पार्टी जम्मू–कश्मीर की निर्मम हत्या उन्हीं, के आवास के निकट एक गली में दो आतंकवादियों द्वारा प्रातः 9.45 बजे की गई। गोलियों से उन का वक्ष छलनी हुआ और अल्पसंख्यक समाज के साथ–साथ इलाके के बहुसंख्यक समाज ने भी इस नृशंसहत्या कांड पर खेद व्यक्त किया।

पंडित टीका लाल की हत्या विदेश में रची आतंकी कार्य योजना की क्रियान्विति थी। पहली चोट, पहला, प्रहार, पहला आघात। 'मिल जाओ', 'गल जाओ' या 'निकल जाओ बस और कोई रास्ता नहीं । यदि नहीं मानोगे तो अंक पट्ट (Score Board) पर अंक बडते जायेंगे। अल्प संख्यक को भय भीत करना है उस की विवशता से लाभ उठाकर और उसे काफ़िर कह कर उस की आस्था पर प्रहार करना है।

'काफ़िर' कौन ?

मैं स्पष्ट शब्दों में लिखना चाहता हूँ कि कश्मीरी पंडित काफ़िर (शुद्ध उच्चारण)/ काफ़र (फारसी) नहीं है। 'काफ़िर' का अर्थ है जो खुदा को नहीं मानता, बेदीन है, बे ईमान है, नास्तिक है, सत्य को छिपाता है, ईश्वर की दी हुई ने'मतों (अद्भुत उपहार) पर कृतज्ञता प्रकट नहीं करता।

कश्मीरी पण्डित का व्यवहार काफ़राना नही है। वह तो परमसत्य/परम शिव/सदा शिव का उपासक है। इसे ही इस्लाम में खुदा/अल्लाह कहते हैं। कश्मीरी पण्डित एक ईश्वर की सत्ता पर विश्वास रखता है। वह तो विराट सत्ता के सम्मुख नत मस्तक

हो जाता है। सृष्टि को उस की परमइच्छा का परिणाम समझता है और एक निश्चित धर्माचरण का पालन करता हुआ पाप और पुण्य के मध्य रेखा खींच कर तथा परम ब्रह्म की दिव्य शक्तियों से आनन्दित होकर जीवन जीने में विश्वास रखता है। वह न तो बेदीन (नास्तिक) है न बेईमान है और न अधर्मी। उसे ईश्वर की सत्ता पर अटूट विश्वास है। उस में पहचान की तड़प है और लय होने की आकांक्षा।

इसलिये किसी भी अल्पसंख्यक पर काफ़िर की लेबल (नामपत्र) चिपकाना उचित नहीं होगा। उन्मादग्रस्त धर्मान्ध ऐसा कर सकते हैं लेकिन दीन और धर्म की सही पहचान रखने वाले विवेकशील जन इस प्रकार की सोच नहीं रखते।

मैं कह चुका हूँ कि पण्डित टीका लाल टॅपलू की नृशंस हत्या पर कश्मीर के बहुसंख्यक समाज के पाँव तले मिट्टी खिसक गई। वे बन्दूक के भय से चुप हो गये लेकिन मन ही मन खेद व्यक्त करते रहे। भट्ट साहब लिखते हैं –

'Inspite of the fact that he belonged to BJP the local Muslims of the area held him in high esteem .Their weeping and wailing on his death testified to his close relation with his people. The entire city got plunged into grief------- And the saner Muslims have condmned this dastardly and cowardly act of killing an unarmed citizen'. Page. 43-44

(xvii) स्वर्गीय प्रेमनाथ भट्ट की तीन रचनाओं पर एक साथ विचार करना संगत होगा। ये तीन रचनाएँ इस प्रकार है :–

'The Insurgency in Kashmir- Masterminded from Saudi Arabia and Pakistan'

(organiser-16-6-1985)

'Anti India Elements in Kashmir (organiser-9-3-1986)

'The Kashmir Time Bomb (organiser-12-9-1987)

विस्थापन के प्रारम्भिक दिनों में यातनामय जीवन जीते मैं कभी सोचता था कि क्ला नकोप और ऐ के–47 स्वचालित बन्दूकें गाजर मूली की तरह क मीर कैसे पहुँची। कहाँ से आई, क्यों आई, और कैसे आई। हज़ारों डालर मूल्य की एक एक बंदूक को किसने मोल चुका कर खरीदा और तथा कथित धर्मयुद्ध लडनें वाले क मीरी जहादी के हाथ थमा दी। यह षडयंत्र एक दिन, एक महीनें, एक साल में नहीं रचा गया होगा। सन् 1989 ई० पूर्व गुप्त रूप से कई वर्षो तक यह षडयंत्र चलता रहा और हम ज्वालामुखी पर बैठे अपने सपनें ही सजाते रह गये। उस कालखण्ड़ में सीमाऔं पर पहरा देने वाले सुरक्षा कर्मियों से तनिक पूछिये– कितना टोपी । इशारा काफी है। हमें होश तब आया जब आतंकी ने घाटी में प्रकट रूप से अपनी उपस्थिति दर्ज करा दी। आ चर्य इस बात पर हो रहा है कि क मीरी युवक सैंकडों की संख्या में सीमा पार कैसे चले जाते थे और शस्त्र सहित किस प्रकार लौट आते थे–कितना टोपी। इशारा काफ़ी है।

हमें होश तब आया जब आतंकी ने घाटी में प्रकट रूप से अपनी उपस्थिति दर्ज करा दी। आश्चर्य इस बात पर हो रहा है कि कश्मीरी युवक सैंकडों की संख्या में सीमा पार कैसे चले जाते थे और शस्त्र सहित किस प्रकार लौट आते थे – कितना टोपी ।

यह माजरा क्या था। भट्ट साहब ने इसकी एक गाँठ तो खोल दी है। उन्हें विश्वास था कि आतंकी षडयंत्र के प्रेरणा स्रोत कई सम्पन्न मुस्लिम देशों में सक्रिय हैं ब्लैक गोल्ड सम्पन्न ये देश भारत के विखंड़न में रूचि रखते हैं। पैसा पानी की तरह बहता चला आया और पाकिस्तान भी इस प्रवाहित स्रोत से हाथ धोने लगा। पाकिस्तान के पास उन्मादी, अशिक्षित, असभ्य, नृशंस, रक्त पिपासु जहादियों की कमी नहीं थी। यदि कुछ कमी थी तो उसे

अफ़गानिस्तान के पठानों ने पूरा किया। भला हो बड़े भाई का जिन्होंने दूसरी सम्पन्न शक्ति को नीचा दिखाने के लिये दक्षिण पूर्व ऐशिया में बारूद के ढेर खड़े किये। वे आज अपने कुकर्मों का दण्ड भुगत रहे हैं और आगे भी बहुत समय तक उन्हें भुगतना होगा। 9/11 न्यूयार्क में धटित घटना क्रमने उन्हें झकझोरा, वे जाग उठे और विश्वास कीजिये कि आज तक वे सो नहीं पाये हैं । मुस्लिम राष्ट्रों के भारत–विरोधी व्यवहार के विषय में भट्ट साहब लिखते हैं –

'It is a matter of histor hat with the exception of a small section, all the Muslim countries have opposed Indian case on Kashmir. They have pooled their resources in carrying out Islamic 'Jehad' even in side India and Kashmir-------- Saudi Arabia, Iran,Libya and other Muslim countries have time and again supported Pakistans case and joined hands in an unholy combine to free Kashmir from the Indian control.' Page -01-

रियाध (Riyadh) सऊदी अरब में जमात–ए–तुलबा (कश्मीर)के तत्कालीन प्रधान की गतिविधियाँ, 'जमात–ए–इस्लामी' 'क मीर लिबरेशन फ्रंट,'महाजें आज़ादी',पीपुल्स लीग','अलफताह' और –प्यलबिसिट फ्रंट' सब सावधानी के साथ राष्ट्र विरोधी अभियान चलाने में सक्रिय हैं। रावलपिंडी में अमान उल्लाह खान के नेतृत्व में नेशनल लिबरेशन फ्रंट की स्थापना हुई। इस प्रकार पड़ोसी राज्य विघटनकारी शक्तियों को हर प्रकार की सहायता देकर उत्साहित करता रहा। समस्त घटना चक्र पर अपना आक्रोश व्यक्त करते हुए भट्ट साहब लिखते है–

'But the major share of shame and blame must go to the centre which has failed to evolve a realistic long term Kashmir Policy aimed at closer integration of the state with the country.'

'Anti India Element in Kashmir'-The truth Foretold-

Page 5

भट्ट साहब की ये रचनाएँ पढ़ कर मुझे आ चर्य हो रहा है कि उन की हत्या तत्काल क्यों नहीं की गई है। ाायद विरोधी ाक्तियाँ मौके (उपयुक्त समय) की तलाश में रही होंगी और भट्ट साहब 1989 ई० तक बच निकले।

(ix) बुद्धि जीवी और महान लेखक के बारे में यह कहा जाता है कि वह भविष्यद्रष्टा होता है और भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं का पूर्वाभास वह किसी न किसी प्रकार से करा ही देता है। जिस वस्तु स्थिति का हमें आज अनुभव हो रहा है–

2008 ई० में, आज से 22 वर्ष पूर्व भट्ट साहब बड़े साहस के साथ उसी कटु यथार्थ पर प्रकाश डालते हुए लिखतं हैं–

'It can be safely said that an appeal for the unity and integrity of India has no relevance in Kashmir and those who chant such mantras are consigned to the limbooy oblivion.'Page-7

चाहे आज़ाद साहब आये या सईद साहब, फारूक साहब आयें या शाह साहब, उमर अब्दुलाह साहब आये या महबूबा मुफ़्ती राजनीतिक सौंच को एक नई दिशा देने में कभी सफल नहीं होंगे। वे भारतीय संविधान एवं राष्ट्र ध्वज के प्रतिसमर्पित हैं इस में सन्देह नहीं लेकिन अलगाव वादी शक्तियों को विभिन्न मुस्लिम राष्ट्रों से जो बल मिल रहा है और पड़ोसी राज्य के गुप्तचर विभाग–आई एस आई– ने जो आग सुलगााई है उस को बुझाने में ये सभी असमर्थ और अविज्ञ है। भट्ट साहब के शब्दों में–

'Shah may come and Farooq may go but the Kashmiris mood will remain the same so far as the separatist conviction is concerned?- Page-7

वास्तव में वोट की राजनीति ने रा ट्र की एकता और अखंडता को खतरे में डाल दिया है। कुर्सी बचाओ, अड्डा जमाओ, नोट पकडाओ और लूट मचाओ बाकी सब खुदा के भरोसे छोड़ दो।

मुम्बइया भाषा में 'ट्रेयनशन नहीं लेने का'। भट्ट साहब भारत विरोधी उन गति विधियों से भी परिचित हैं जो लंदन मे गुप्त रूघ से हो रही हैं। 200 वर्ष अंग्रेज़ों के गुलाम रह कर, जूतामार खाकर, गालीगलौज सुनकर हम सब कुछ भूल गये। क्या अंग्रेज़ भारत का मित्र या हितैषी हो सकता है ? मुझे इसमें सन्देंह है। भारत विरोधी गतिविधियाँ चलाने में वे भी रुची रखते हैं क्योंकि उन्हें भी विघटन में विश्वास है। वे सन् 1947 में यहाँ से चले गये लेकिन भारत के दो टुकडें करके। भट्ट साहब लिखते है–

'Today, London is emerging as the centre of Anti India activities with two most important centres of Power, Khalistan House in Bayaswater and Kashmir House in Luten Jaggit Singh Chauhan and Aman ullah Khan, the two anti-India leaders , are together fighting a common ;enemy;i.e India'. Page - 9

### (xx) मु . यू . फ्रंट भट्ट साहब की नज़रों में

भारत विरोधी प्रचार और राष्ट्र द्रोह फैलाने में मु–यू–फ्रंट (MUF) (मुस्लिम यूनाइटिड फ्रंट) की भूमिका भी सन् 1986-87 में अत्यंत महत्वपूर्ण रही है।इस संगठन को भारत विरोधी शक्ति के रूप में खडा करने में अब्दुल रज़ाक (निवासी बचरू कुलगाम), गुलाम नबी अहरार (शोपयान निवासी) हकीम गुलाम नबी (तुर्कवांगाम चित्रगाम–कुलगाम) तथा मुहम्मद यूसुफ उर्फ़ सलाह–उ–दीन की भूमिका महत्वपूर्णरही है। इस विरोधी दल की छत्रछाया में सम्प्रदायिक शक्तियां भी उत्साहित हुई और दक्षिण कश्मीर में आग धधकने लगी। यहाँ क़ाज़ी निसार विघटन प्रधान शक्तियों का प्रतिनिधित्व करता हुआ कश्मीर को इस्लामिक स्टेट बनाने की घोषणा के साथ ही भारत राष्ट्र के साथ इस के विलय को जनसभाओं में नकारने लगा। काज़ी निसार के साम्प्रदायिकता वादी चिंतन पर विचार करते हुए भट्ट साहब लिख़ते है।

'Qazi Nisar declared that Anantnag should be officialy

remained as 'Islamabad' and those shopkeepers who use 'Anantnag' on their sign boards should be boycotted by Muslims. He laid claim to an ancient Hindu shrine of Gautam Nag founded by Gautam Rishi'.

गौतम नाग हिन्दू तीर्थ (shrine) जिस भूमि पर स्थित है उसे अनन्तनाग निवासी पण्डित श्रीधरजू ददरू ने देवस्थान के लिए दान (Donate) किया है।

20 अगस्त सन् 1987 ई० इकबाल पार्क श्रीनगर में मु–यु–फ (MUF) ने एक विशाल सभा का आयोजन किया। वहाँ क्या कुछ हुआ यदि वह सब देखकर या सुन कर भी सत्ताधिकारियों को वस्तुस्थिति का एहसास नहीं हुआ तो यह भारत राष्ट्र का दुर्भाग्य है। समझ में नहीं आ रहा है कि हम से भूल कहाँ पर हुई है। अक्तूबर सन् 1947 ई० में कबाइली आक्रमण के समय, सन् 1965 में, सन् 1971 में या सन् 1989-90 ई० में। 20 अगस्त सन् 1987 ई० के दिन इकबाल पार्क की जनसभा प्रेम नाथ के शब्दों में 'open revolt and rebellion aganist India'.(Page -14-) लिखते है–

'It was here that MUF leaders declared that without solving the Kashmir question (accession) there can be no peace in the state. Full throated 'Pakistan Zindabad'

and 'JABRI NAT TODE DOO,KASHMIR HAMAIN CHODE DOO', 'HUM KEYA CHAHTEY HAIN PAKISTAN were shouted.

'The Kashmir Time Bomb'- 'The Truth Foretold'-Page-14-

भट्ट साहब की रचनाओं में तत्कालीन कश्मीर अपनी समस्त विषमताओं के साथ साकार हो उठा है। यहाँ की राजनीतिक उथलपुथल विघटन कारी शक्तियों के चिद्रोह प्रधान प्रदर्शन, भारतीय सत्ता के प्रति आक्रोश, सस्ती राजनीति, आर्थिक लूट तथा अल्पसंख्यक समुदाय के साथ भेदभाव गरज सम्पूर्ण घटना चक्र के प्रति सचेत थे। न्यायलय में प्रतिदिन ज़िला अनन्तनाग के प्रतिष्ठित

लोगों के साथ उठते बैठते थे अतः उन के विकार ग्रस्त राष्ट्र विरोधी चिन्तन एवं मान्यताओं को जानने पहचानने का उन्हें उचित अवसर मिलता था। उस विषाक्त वातावरण में रह कर गरम लोहे पर चोट करना और विघटनकारियों की असलियत पहचान कर उन के मुँह से नक़ाब उतारना बड़े साहस का काम था। इस का परिणाम कुछ भी हो सकता था। हम ने इस का परिणाम 27 दिस्मबर 1989ई० के दिन देखा और उस की पीड़ा का अनुभव आज भी हमें हो रहा है। उस समय भी कश्मीर घाटी में विदेशी एजेंट सक्रिय थे। गुप्त सूचनाएँ, ज़मीन के नक्षे, सैनिक संरचना एवं सेना संचालन, स्थानीय एजंटों से सम्पर्क, विद्रोहात्मक गतिविधियों को चलाने के हेतु आर्थिक लोभ, जासूसी एवं एंयाशी सब कुछ हो रहा था।

सीमा वर्ती क्षेत्रों में जासूसी काम लगातार चल रहा था। विदेशी एजेंटों ने जम्मू संभाग में भी अपने सम्पर्क सूत्र स्थापित किये थे। धन लोभवश बहुधा आदमी जयचन्द और मीर जाफर को भी पीछे छोड़ देते है। इस कारण भट्ट साहब ने अपने एक लेख 'Sabotage subversion and Espionage in Kashmir from Pakistan' में तथ्योंद्घाटन करते हुए लिखा है–

'Uri and Kupwara in Kashmir, Reasi,Kathua,Poonch and Rajouri areas in Jammu are safe sanctuaries of these foreign agents who develop contacts with military officers of weak morals and our brand of Jaichands and Mir Jaffers.'-Page-19-

## (xxi) गो-वध और कश्मीर

अल्पसंख्यकों में संत्रस (horror) और आंतक (Terror) फैलाने के हेतु कई हर्बोज़र्ब व्यवहार में लाये गये। गौ उसके लिये पूजनीय है–माता स्वरूप। शास्त्रानुसार भी गौ, ब्राहमण, पृथ्वी, नारी एवं जनेउ उसकी आस्था के आधार स्तम्भ हैं। गौ को हम अपने द्वार

की शोभा और ग्रामीण जीवन का गौरव मानते है। माँ के दूध और गौ के दूध में कोइ अन्तर नही। यह हमारा विश्वास है और इसी विश्वास पर ठोकर मारकर शारदा भूमि के वक्ष पर गौवध खुले आम होने लगा और आजकल तो हालत असहनीय है। भट्ट साहब ने सन् 1987 ई० में ऊपर वर्णित लेख नें लिखा है–

'To create Panic among minority, a number of Cow and buffalo meat shops have been opened in almost al the towns and villages of the valley, inspite of this being a criminal offence Panishable under J&K Pc. This land is allowed to rust on the statue book and appeals of Kashmir minority on this score have yeilded no results'. Page-20-

(xii) 19 जुलाई सन् 1987 ई० में 'समाचारपोस्ट' में भट्ट साहब का स्तम्भ लेख (Jagmohan Era in Kashmir) प्रकाशित हुआ। इस में कोई सन्देह नहीं कि श्री जगमोहन एक योग्य प्रशासक जागरूक राजनितिज्ञ, प्रबुद्ध लेखक, अनुभवी पत्रकार, पर्यावरण विशेषज्ञ, नागरिक विकास योजनाओं के आयोजक एवं बेहद परिश्रमी जनसेवक है। अनुशासन बद्ध जीवन जीने में वि वास रखने वाले राष्ट्र भक्त राज्यपाल ने कश्मीर वासियों के सम्मुख भ्रष्टाचार रहित ासन व्यवस्था का आदर्श पेश किया। घटनाएँ निरन्तर घटती रही पर राज्यपाल महोदय ने कभी भी अपने सिद्धान्तों के साथ समझौता नहीं किया।

मैं समझता हूँ कि दूसरी बार प्रदेश के राज्यपाल का कार्यभार ग्रहण करना प्रतिकूल परिस्थितियों में उचित निर्राय नहीं था। अप्रैल सन् 1984 से जूलाई सन् 1989 तक पाँच वर्ष राज्यपाल रहने के बाद उन्होंने पुनः जनवरी 1990 ई० में राज्यपाल का पद ग्रहण किया और मई सन् 1990 ई० में उन्हें त्याग पत्र देना पड़ा। लेकिन यदि ऐसा न होता तो विश्वप्रसिद्ध रचना 'My frozen Turbulance in Kashmir' कहाँ लिखी जाती। इस पुस्तक का प्रथम प्रकाशन सन् 1991 ई० में हुआ । 823 पृष्ठों की पुस्तक 'अलाईड

पबलिशर्स लिमिटिड' से प्रकाशित हुई। फिर लगातार इस पुस्तक के कई संस्करण प्रकाशित हुए। षडयंत्र प्रधान भारतीय राजनीतिक इतिहास में इस रचना का अपना विशिष्ट महत्त्व है।

जगमोहन जी बी.जे.पी. राज्यकाल में केन्द्रीय मंत्री रहे लेकिन उन की सेवाओं एवं प्रशासनिक योग्यताओं का वाजपेयी सरकार समुचित उपयोग न कर सकी।

जगमोहन जी के जीवन में कई उतार चढ़ाव आये। स्वर्गीय संजय गान्धी ५. दोस्ती से लेकर वाजपेयी सरकार का स्नेहल तिरस्कार सब कुछ देख और सह कर भी उन्होंने राष्ट्र हित की कभी उपेक्षा नहीं की। मैंने श्री जगमोहन को एक प्रबुद्ध नागरिक, योग्य प्रशासक एवं कर्तव्यनिष्ठ भारतीय के रूप में देखा है।

जगमोहन जी की ऐतिहासिक चेतना, कुशाग्र बुद्धि, आदमी को पहचानने की शक्ति, तुरन्त निर्णय लेने की क्षमता और शोषित पीड़ित के प्रति सहानुभूति उन्हें स्वतंत्र भारत के योग्य प्रशासकों की अग्रिम पंक्ति में लाखड़ा, कर देती है। भट्ट साहब की पुस्तक 'The Truth Foretold' का अग्रलेख 14 पृष्ठों पर लिखकर राज्य सभा सदस्य श्री जगमोहन ने कश्मीर के भूत और वर्तमान के घटना क्रम पर एक साथ प्रकाश डाला है। भट्ट साहब उन के व्यक्तित्व का एक प्रभाव शाली रेखा चित्र प्रस्तुत करते हुए लिखते है।

^Amongst the galaxy of Governers that Kashmir has seen on its horizon, Shree Jagmohan has been the sun amongest the stars----It was for the first time the people of Kashmir saw a man of the status of Governer mixing and mingling with common people and sharing their joys and sorrows---- He created very healthy traditions regarding administration which were unfortunately discarded by his successor. He minimised the scope for nepotism and corruption." Page 172-173

मैं समझता हूँ कि स्वर्गीय भट्ट साहब के लेखन कार्यपर पर्याप्त चर्चा हुई और विज्ञ (Learned) पाठक स्वातंत्र्योत्तर कश्मीर के राजनितिक परिदृश्य से भलीभाँति परिचित भी हुए होंगे। राजनीति के साथ कूटनीति सदा जुड़ी रहती है। दोनों एक दूसरे के परिपूरक हैं। राजनीतिक मंचपर परदा उठ जाने पर क्या दिखता है यह एक बात है लेकिन परदे के पीछे क्या हो रहा है अथवा क्या होने जा रहा है –यह तो दूसरी बात है। अगवाड़े में घटना क्रम को तो सब देखते हैं लेकिन पिछवाड़े में कौन से गुल खिलाते हैं सब को ज्ञात नहीं होता। कानों कान इस की भनक तक नहीं पडती। 'माल खाये सैयाँ हमार'– यही तो राजनीति है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पिछले 60 वर्षों में हम ने बहुत कुछ पाया लेकिन बहुत कुछ खोया भी है। क्या यह सत्य है कि इस देश में –

1) शख्सी राज्य। एकतंत्र शासन व्यवस्था पुनः जीवित हो उठी।

2) हम दुकडों में बट कर भारत की अखंडता का राग अलापते हैं।

3) भाई भतीजावाद आसमान छू रहा है।

4) देश में विघटन की राजनीति ज़ोर पकड़ रही है।

5) विदेशी लाखों की संख्या में भारत में घुस आये हैं।

6) घूसखोरी चरमसीमा पर है।

7) शहरी करण और सामाजिक विघटन द्रुतगति से हो रहा है।

8) देश के भीतर आतंकी हाहाकार मचा रहा है।

9) पड़ोसी सैंकड़ों प्रशिक्षण केन्द्रों में उन्मादग्रस्त बन्दूकियों को भारत विघटन के लिये तैयार कर रहा है।

10) देश की दलगत राजनीति ने राष्ट्र सम्मान के अस्तित्व को

ही खतरे में डाल दिया है।

इन सब संमस्याओं के समाधान सम्भव हैं लेकिन देश एक विकराल दैत्य का सामना करने में असमर्थ है। क्या आप उस दैत्य से परिचित हैं ? तनिक अनुमान लगाइये।

## प्रेम नाथ भट्ट म्यमोरियल ट्रस्ट

XIV) भट्ट साहब के शहीद होने के तुरन्त बाद 'पण्डित प्रेम नाथ भट्ट म्यमोरियल' ट्रस्ट की स्थापना हुई। हर वर्ष उन के बलिदान दिवस को 'चेतना दिवस' के रूप में मनाया जा रहा है। विस्थापित कश्मीरी पण्डित बड़ी संख्या में अभिनव थियेटर जम्मू में एकत्र होकर अमर शहीद को श्रद्धाँजलि अर्पित करते हैं। आज तक कई गण्यमान्य नेताओं, बुद्धि जीवियों, राज्य मंत्रियों, लेखको, पत्रकारों, जाति प्रतिनिधियों और सामाजिक–राजनीतिक कार्यकर्त्ताओं ने इन वार्षिक समारोहों में भाग लेकर इन की शोभावृद्धि की इस में कोई सन्देह नहीं। चेतना दिवस' के दिन हम हर वर्ष एक जाति–प्रतिनिधियों के द्वारा विस्थापित समाज की ज्वलन्त समस्याओं को जनमानस के सामाने अथवा राज्य अधिकारियों की नोटिस में लाने का प्रयास करते हैं। आंकडों के साथ तथ्य प्रस्तुत किये जाते हैं लेकिन सत्ताधारियों के कान पर जूँ तक नही रेंगती। यह सब कुछ चलता है और चलता रहेगा।

मैं समझता हूँ कि हर वर्ष स्मृति–पत्र प्रस्तुत कर विस्थापित समाज जीवित होने की गवाही दे रहा है। ये स्मृति पत्र राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार के पास आवश्य पहुँचते हैं। प्रिंट और एलकत्रानिक मीडिया इन्हें सम्पूर्ण राष्ट्र की नोटिस में लाते हैं। इन की प्रतियां विदेशों में भी पहुँचती हैं। इसलिये यह कहना कि यह एक व्यर्थ की कसरत है, बेमानी कवायद है उचित नहीं होगा। दक्षिण कश्मीर के मूल निवासियों का उत्साह देखकर न केवल मैं प्रभावित होता हूँ बल्कि प्रेरित भी होता हूँ। इस दिन मातृ शक्ति अपनी संकल्पबद्ध उपस्थिति से भट्ट साहब के आत्म बलिदान को

महिमा मंडित कर देती हैं।

यह सब ठीक है, सराहनीय है। लेकिन 'प्रेम नाथ भट्ट' म्यमोरियल ट्रस्ट कुम्भकरण की नींद सोता है और प्रत्येक वर्ष दिसम्बर मास में जगता है। जाग कर हवापानी की तलाश में इधर उधर द्वार खटखटाने लगता है। ट्रस्ट आजकल बिना अध्यक्ष के जीवन सांसें ले रहा है। इन्हें तलाश है दक्षिण कश्मीर निवासी किसी परमानन्द कृष्णजू राज़दान, कश्यप बन्धु या न्याय मूर्ति जस्टिस जे.एन.भट्ट की। ट्रस्ट यदि चाहता तो एक वर्ष कई कार्यक्रमों का आयोजन करता। व्याख्यान, परिसंवाद गोष्ठियाँ, महिला उद्धार कार्य शालायें,कवि सम्मेलन, विधि विशेषज्ञों के व्याख्यान, लोक संगीत कार्यक्रम आदि। क्रिकेट मैच कराने की रिवायत को आगे बढ़ाते लेकिन यह लोग भी क्या करें, मजबूर हैं क्योंकि कुम्भकरण को गहरी नींद सोने की आदत जो है।

(XXV) भट्ट साहब के शहीद होने के बाद कई बुद्धिजीवियों, लेखकों तथा उन के सहयोगियों, राजनीतिक कार्यकर्ताओं, सामाजिक संस्थाओं, पत्रकारों, चिन्तकों और प्रतिष्ठित जाति बन्धुओं ने उन्हें श्रदाँजली अर्पित करते हुए रचनाएँ लिखी है अथवा जाति प्रतिनिधि के रूप में चेतना दिवस पर अपने विचार व्यक्त किये हैं। भट्ट साहब के व्यक्तित्व की सही पहचान के हेतु इन रचनाओं का अपना महत्व हैं। इन महानुभावों में उल्लेखनीय हैं –

1 श्रीवासदेवजी सह मुख्य सचिव, विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी

2 श्री के नरेन्द्र मुख्य सम्पादक दैनिक प्रताप

3 श्री जगमोहन भूतपूर्व राजपाल, जम्मू कश्मीर राज्य

4 श्री मदन लाल खुराना भूतपूर्व मुख्यमंत्री, दिल्ली राज्य

5 श्री प्रो एन सराफ आयुर्वेदिक चिकित्सक

6 श्री यश भसीन, उपप्रधान प्रेमनाथ भट्ट म्यमोरियल ट्रस्ट तथा सम्पादक–जम्मू पॅनोरमा

7 श्री प्रद्युम्न के. जोजुफधर भूतपूर्व प्रिंसिपल, कावेंटरी स्कालाँरस चिनोर जम्मू

8 श्री ओ एन भट्ट 'कुठहारी'– एक विस्थापित स्तम्भलेखक
9 श्री नन्द लाल शाह –अधिवक्ता
10 श्री बी के कौल – सेवा निवृत राज्य कर्मचारी
11 श्री एम एल ऐमा – शिक्षा विद एवं समाज सेवक
12 श्री अग्निशेखर – लेखक एवं सामाजिक कार्यकर्त्ता
13 डॉ के एल चौधरी – चर्चित चिकित्सक
14 प्रोफेसर भूषणल ल कौल – सेवानिवृत अध्यापक
15 डॉ आर एल ٠. – पत्रकार एवं समाजसेवक
16 श्री अरुण जेटली बी जे पी नेता एवं चर्चित अधिवक्ता

XVI भट्ट साहब की लगभग समस्त रचनाओं का अध्ययन करने के बाद मैं केवल तीन महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्यों की ओर पाठक वर्ग का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ।

(अ) जनवरी सन् 1984 ई० 'मार्तण्ड' में प्रकाशित 'The Trium virate of Kashmi ri Pandits' नामक रचना में भट्ट साहब लिखते हैं

'Kashmir has been and continues to be in the minds of International conspiraters, who would very much love to see Kashmiri Pandit out of the state'. 'The truth foretold' - Page 120

जो भट्ट साहब ने सन्. 1984 ई० में लिखा था वह आज यथार्थ है। यही है घटनाचक्र का पूर्वाभास।

(आ) मार्तण्ड जून 1986 ई० में 'Trauma of Kashmir Pandit' से भट्ट साहब का एक स्तंम्भ लेख प्रकाशित हुआ। वे पूरे आत्म विश्वास के साथ जागरूक समाज से प्रश्न पूछते हुए लिखते है।

"Can any one point out a single instance where this molecular minority has ever indulged in any act which would irritate the religious susceptibilities of his Muslim brothers." 'The (Truth Foretold' - 71&72 )

यह है उस अल्प संख्यक समाज का यथार्थ जो आज अपने ही देश में रिफ्यूजी बन कर जीने की यातना भुगत रहा हैं।

(इ) 'मार्तण्ड' मई 1989 ई० में भट्ट साहब का स्तम्भ लेख 'Kashmir Minority in Gas Chambers of secular Laboratory'

शीर्शक से प्रकाशित हुआ। अपने जाति बन्धुओं के दुर्दशाग्रस्त जीवन पर प्रकाश डालते हुए उन्होंनें लिखा हैं–

'Kashmiri Pandits, as they are called, have history of persecution and torture which can favourably compete with tragic story of Jews.After two thousand years of life in exile the jews obtained a home land and their sufferings came to close. But the Kashmiri Pandit, the crown jewel of India,continues to live in agony and ignominy.'The Truth Foretold'- पृ० 107)

## निष्कर्ष

भट्ट साहब व्यक्तित्व एवं कृतित्व का गहन अध्ययन करने के बाद यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वे हिन्दुत्व के पक्षधर थे लेकिन कट्टर धर्मान्ध रूढ़िग्रस्त हिन्दू नहीं थे। लगता है कि वे एक आस्थावान जागरूक हिन्दू थे। मानव प्रेम, परस्पर बन्धुत्व की भावना एवं राष्ट्र भक्ति उन का परमध्येय था। राष्ट्रीय भावना के साथ वे कोई समझौता नहीं कर सकते थे। दक्षिण कश्मीर के कई जाने माने मुसलमान उनके मित्र, सहकर्मी, चाहने वाले एवं हितैषी थे। व्यक्तिगत सम्बंन्धों के आधार पर वे उनके परामर्शदाता, शुभचिन्तक, सहायक बन्धु एवं हित रक्षक थे। लेकिन जहाँ सिद्धान्तों, विश्वासों, राष्ट्रीय मान्यताओं, अल्पसंख्यक के मन में असुरक्षा एवं विखंडन के प्रश्न उपस्थित होते थे वहाँ वे उनसे अलगहट कर क्रुद्धमुद्रा मे असहमति के साथ अपना आक्रोश व्यक्त करते थे। उस समय धर्मयुद्ध छिड़ जाता था और भट्ट साहब व्यक्तिगत हितों की चिन्ता किये बिना चट्टान की तरह दृढ़ संकल्प के साथ खड़े हो जाते थे और सत्य असत्य, न्याय अन्याय तथा उचित अनुचित के मध्य रेखा खिँच जाती थी।

दक्षिण कश्मीर में भट्ट साहब की टक्कर का कोई दूसरा

स्वयसेवक आजतक हमें दिखाई नही देता।

समझ में नहीं आता है कि भट्ट साहब के शहीद होने के बाद मित्रें ने मधुर स्मृतियों पर समय की धूल जमने क्यों दी। जो कल तक अपने थे वही आज बेगाने नज़र आते हैं। इसके लिये उत्तरदायी कौन है। मित्रजन, एक समय के शुभ चिन्तक, पथ के सहयात्री, जानेमन अथवा भट्ट साहब की संतति। लगता है कि दोनों के मध्य खाई गहराई है। प्रायः देखा जाता है कि जब तक व्यक्ति या वस्तु की आव' यकता होती है तब तक उस का महत्त्व बना रहता है लेकिन जब व्यक्ति की आवश्यकता नहीं रहती या वस्तु जीर्ण– शीर्ण पड़ जाती है तो किस्सा तमाम हो जाता है। यही वर्तमान कालीन राजनीति में निहित कूटनीति है।

मित्रजन यदि चाहते तो भट्ट साहब के आत्मबलिदान को राष्ट्रीय स्तर पर एक देशभक्त के आत्मोत्सर्ग के रूप में गौरवान्वित करते। हरवर्ष उन की स्मृति में कई कार्यक्रमों का आयोजन होता, भाषण–माला शुरू की जाती, युवा अधिवक्ताओं के एक दिवसीय या दो दिवसीय सम्मेलनों का आयोजन होता। शिक्षारत छात्र–छात्रओं में आकर्षक प्रतियोगिताओं की व्यवस्था होती तथा अन्य कार्यक्रम चलाये जाते। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि भट्ट साहब के व्यक्तित्व के केवल एक पहलू पर ही उन की संतति ध्यान दे रही है। व्यक्तित्व के सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए एक अनुश्रत हस्ती (Legendary entity) के रूप में वे उन्हें पेश नही कर रहे हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि स्वर्गीय भट्ट साहव का जीवन–चारित प्रकाश स्तम्भ के रूप में हमारी भावी पीढ़ी के संघर्ष प्रधान जीवन पथ को आलोकित करता रहेगा। भट्ट साहब एक योग्य अधिवक्ता ही नहीं बल्कि एक लेखक, पत्रकार, समाज सेवक, राष्ट्र उन्नायक, जाति उद्धारक, कश्मीर इतिहास के प्रबुद्ध पाठक, कुशलवक्ता, धर्मशास्त्र पर गहरी नज़र रखने वाले महा पण्डित एवं अहंकारहीन लोक सेवक थे।

अपने गहन अध्ययन एवं अनुभव के आधार पर उन्होंने कश्मीर के आने वाले कल के विषय में जो भविष्यवाणियाँ की थीं आज सत्य साबित हो रही हैं। कश्मीर इतिहास के भूत और भविष्य के विषय में उन का अनुमान कितना सही था—यह देखकर प्रबुद्ध पाठक आश्चर्य में पड़ जाता है। भट्ट साहब को अपने पेशे के साथ बहुत लगाव था। वे सदा अपने काम में व्यस्त दिखाई देते थे। देशी और विदेशी महान लेखकों की रचनाओं का विधिवत अध्ययन करते थे। कई सामाजिक संस्थाओं के साथ जुड़े थे अतः इधर–उधर जाने के लिये प्रवास पर भी रहते थे। जिन्दगी में एक मिशन (जीवन लक्ष्य) को लेकर वे निकल पड़े थे। वे जानते थे कि मंज़िल बहुत दूर है लेकिन उन्हें विश्वास था कि एक न एक दिन वहाँ तक पहुँचना ही होगा।

भट्ट साहब एक जिन्दा दिल (जीवन्त), उत्साही, खुशमिज़ाज (रसिक) हाज़िर जवाब, शिष्ट, आस्थावान शिवभक्त थे। माँ वितस्ता का प्रिय पूत अपने अन्तिम समय तक 'पितृऋण', ऋषिऋण और देव ऋण चुकाने में व्यस्त रहा। वे जी रहे थे – हम सब के लिये, उन्होंने शहादत का जामनोश किया – हम सब के लिये और आज उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व प्रज्वलित पथ दीप है—हम सब के लिये।

स्वर्गीय प्रेम नाथ भट्ट के पौत्र श्री रोहित भट्ट ने 20 अक्तूबर 2008 ई० के दिन एक पत्र के द्वारा अपने दादा जी के भव्य व्यक्तित्व का आकर्षक छवि–चित्र उभारकर उन के त्याग बलिदानमय जीवन पर प्रकाश डालते हुए मुझे सूचित किया कि 'At the end his soul entered the mother land. He took birth from one mother and gave his life for another mother i.e. Moj Kashir,. (28 अक्तूबर, 2008 ई०)

भूषण लाल कौल

# संजीवनी शारदा केन्द्र द्वारा प्रकाशित साहित्य

1. शारदा (ग्राम एवं तीर्थ)
2. हेरथ (अरव ज़ान)
3. Kshemendra
4. उमा नगरी
5. परमानन्द
6. कृष्ण जू राज़दान
7. Lalleshwari
8. Jonraja
9. परा प्रावेशिका
10. महाशिवरात्रि (कश्मीरी पद्धति)
11. शारदा पुरस्कार प्राप्त महानुभावें / संस्थाओं के परिचय पत्र

"They shall not have died invain" Abraham Lincoln

"On December 27, 1989, when the after noon sun of a cold wintry was fast losing its warmth in the sacred twon of Anantnag, a voice of sanity, a voice resounding with patriotic fervour, a voice of concern for the future of the country, was stilled for ever by the bloody and brutal bullets that began to be unleashed in the Kashmir valley by the combined forces of internal subversion and externally sponsored terrorism. That voice was of a nationalist, a perceptive journalist and an indefatigable social worker, Prem Nath Bhat, who drew inspiration not only from the great vision of India from Kashmir to Kanya Kumari but also from the service - oriented message of Swami Vivekananda. Till the last breath of his body, Prem Nath Bhat continued to serve his country, his community and all those who were in need of succour and support.

His powerful pen, till the last movement of his hand, remained at the disposal of all positive causes of public."

Jagmohan (MP Rajya Sabha)

(Former J&K Governor & Central Minsiter)